अध्याय-२

गुजरात के प्रमुख लोक साहित्य के प्रकार।

गुजरात भारत के पश्चिम भाग में स्थित हैं। गुजरात का अस्तित्व अभी आधुनिक समय में हुआ। १जुलाई १९६८ में परंतु उसे पहले गुजरात का अपना एक अलग रुप था। गुजरात की संस्कृति में बहुत सारी संस्कृति का समावेश मीलता हैं। गुजरात का आधा भाग राजस्थान,महाराष्ट्र के साथ जुडा हुवा था। उसी के कारण राजस्थान के मारु गुर्जर और महाराष्ट्र की कोंकळी भाषा और प्रदेश की संस्कृति हमें आज भी गुजरात में देखने को मीलती हैं।

गुजरात में लोकसाहित्य इतिहास बहुत पुराणा और बृहद हैं। गुजरात पाँच भागों में विभाजित कीया हैं।

(१) उत्तर गुजरात (२) मध्य गुजरात (३) दक्षिण गुजरात (४) कच्छ (५) सौराष्ट्र यह पाँच भागों में हमें मीलता है।

गुजरात का लोकसाहित्य भरपूर मात्रा में मीलता हैं। गुजरात में लोकसाहित्य का मुख्य स्त्रोत सौराष्ट्र को मानाजाता हैं। आज भी आधुनिक समय में भी लोकसाहित्य का भरपूर मात्रा में हमें देखने को मीलता हैं। सौराष्ट्र पहले से ही सुमृद्ध प्रदेश के रुप में भी मिलता हैं। गुजरात में १८१२-१३ में हुआ था। गुजरात में लोकसाहित्य संकलन के रुप में हमे झवेरचंद मेघाणी ,जोरावरसिंह जादव, जयमल्ल परमार, हसुयाज्ञिक, बलवंत जानी, आदि लेखकों ने संकलन करके गुजरात के लोकसाहित्य को ओर भी प्रचलित और सुरक्षित कर दिया है।

गुजराती लोकसाहित्य में लोकभरत गुंथण और लोकवस्त्राभूषण जैसी चीजें भी मीलती है। गुजरात में विविध जातीयाँ और ज्ञातीया है। जैसे वस्त्राभूषण, भरत और

लिपण गूथण,ओणियों विशिष्ट है। गुजरात में पहेरवेश के कणबी, रबारी, भरवाड, मेर, मुमना, खोजा, वहोरा, मछियारा, कोणी, वाघेर मीयांणा अलग- अलग होते हैं।

गुजरात में लोकसाहित्य की परीभाषा हमें अलग -अलग रुप में मीलती हैं। सामान्य स्वरुप भारतीय लोकसाहित्य की जैसा ही मीलती है। "गुजराती लोकसाहित्य में लोकसंगीत, लोकनाटय, लोकचित्रकला, लोकस्थापत्य के गृहनिर्माण लोकरंजक कलाओ और लोककसबों आदी जो भी लोकजीवन के साथ जुडा हुवा है, उसे लोकविद्या कहते हैं। उसमें कहावते, बोली के उदगारों, ठन लठळो, मंत्र-तंत्र, डोशीवैदु, भरतगुwथण, लींपण गूंथळ, नट-बजणिया, मदारी और कठपूतली के खेल, खेती और पशुपालन के साथ जो जुडी हुवी, परंपराओं, लोकमानस, को व्यक्त करती मान्यताओं और कारण-वरणनी अनेक विधियों आदि अनेक बाबतों का समावेश लोकविद्या में होता हैं।" (1)

लोकसाहित्य की परिभाषा एक रुपमें नहि मीलती हैं। सबका अपना अपना एक अलग प्रभाव होता हैं। जैसे की लोक-विद्या के रुप में लिखा गया हैं कि " हर्षशोक इत्यादि लागळीनी उत्कटताना प्रसंगे दरेक प्रजा अेनी पोतानी वाणीमां केटलाक उद्‌गारों काठे छे। क्यारेक अेमां चित्कार पण होय छे। ' हाय रे, वेाय रे, अरर, माडी रे आहाहा अेवा अनेक परंपरागत उद्‌गार प्रकारो छे. ते पण वाळी द्वारा व्यक्त थती लोकविद्या नो एक प्रकार छे।" (2) इस तरह लोकविद्या में अपनी रोजबरोज की भाषा का प्रयोग होता है।

लोकसाहित्य की परिभाषा के रुप में ने लिखा है कि. "फोक , फोकलोर, फोकलिटरेचर जैसी पाश्यात्य संज्ञाओ माटे आपने त्यों लोक , लोकविद्या, लोकशास्त्र, के

लोकवाड्मय लोकसाहित्य, अने। लोक संस्कृति जेवी गुजराती संज्ञाओ प्रयोजाती रही छे। फोकना अर्थघटन थी कदाच मुनशी के अन्य जुदे मार्गे दोरवाया लोक अेटले मात्र ग्रामजन, गिरिजन नहीं परंतु अेमांनो नेटिविटीनो संदर्भ महत्वनो छे. तणपदा संस्कारो, वलणो , व्यवहारो वट जे प्रजामां टकी रह्या छे तेओ ते - ते प्रर्दशना फोक -छे लोक छे। आवा लोकोनुं परंपरागत रीते जळवातुं तेमज अेमां प्रादेशिक परंपरागत रीते संबर्धन विवर्धन पामतुं पस्तुत थतु साहित्य ते लोकसाहित्य" (३) इस तरह का साहित्य जो जन-जन के साथ जुडा हुवा हैं उसमें परंपरागत की संस्कृति का रुप मीलता है। लोकसाहित्य की दुसरी परिभाषा में लिखा गया है कि "लोकसाहित्य अेटले मात्र भाषाकीय रचना नहीं। अेने चोक्कस प्रकारना ठाळमां गाता आवती गाती परवते अभिनय थवो। आम अेने संगीत, नृत्य साथे गांठ अनुबंध छे। आ रीते लोकसाहित्य चोक्कस प्रकारना प्रादेशिक - परंपरागत ठाळ - ठंगमां हाव - भाव साथे रजू करवा माटेनुं, जोवानुं सांभाळवा - माळवानुं अनुभववानुं -साहित्य" (४) लोकसाहित्य को प्रादेशिक परंपराओं का समूह होता हैं। "तळपदी बोली, भाषा, उच्चारो जेमां जळवाय होय, तळपदा संस्कारो जेनी विषय सामग्रीमां भरायेला होय अेवा तळपदा प्रसंगो,भावों, लागणीओने अभिव्यक्त करतु साहित्य ते लोकसाहित्य " (5) "लोकसाहित्य नो रचयिता तो कोईक होय ज पण अें अज्ञात रहे। समूहनी मजियारी मूडी बनी जाय अेमा ज्ञातिअे- ज्ञातिअे, जाति-जाति अे, प्रदेशे - प्रदेशे कांट-छांट थती रहे अने कंठोप कंठ, वारसागत रीते जे जळावातुं रहे ते लोकसाहित्य"(६)

इसी तरह लोकसाहित्य की परिभाषा देखते हुऐ पता चलता हें कि वह ग्रामजनों की भाषा नहिं परंतु रोजबरोज हम अपनी भाषा में तथा अपनी संस्कृति से जुडी हुए रहती हैं।

हम अपने संस्कृति को कभी नहि छोडते हैं। हमारे साथ हमारी मूल संस्कृति चलती रहती हैं। समय समय पर हम संस्कृति का नया आवरण ओढ लेते हैं परंतु उसका मतलब यह नहि हैं कि हम अपनी मूल संस्कृति से अलग होते जा रहे हैं। हमारा जन्म गाँव में या किसी भी जाति में हुवा हों। हम उसे अपने धर्म के साथ लगे रहते है। बडे होने पर हम नये अलग - अलग संस्कृति के प्रभाव में जरुर आते है परंतु हम हमारे मूल भाव को कभी नहीं भुलपाते है। हमारी संस्कृति इतनी महान हैं की उनपर बहुत सारी कहानीयाँ फिल्म तक बन चुकी है। हमारे यहाँ शादी को अधिक महत्व दिया गया हैं। वैसे तो स्त्री जब गर्भधारण करती है तब से लेकर मृत्यु तक संस्कार और संस्कृति से जुडे हुए है उसमें सें लग्न, शादी ब्याह को अधिक महत्व प्रदान हुआ हैं। इसी तरह मनुष्य अपने संस्कृति को कभी भूलता नहीं वह जब मृत्यु हो जाती है तब वह अपनी संस्कृति को वारसे को परंपरागत अपनी आने वाली पेढी को देता हैं उसी तरह हर पेढी दर पेढी संस्कृति चलती रहेती हैं। मनुष्य अपने संस्कृति के साथ ही जीता हैं और उसी के साथ मृत्यु भी हो जाती है। इस प्रकार संस्कृति मनुष्य से और मनुष्य संस्कृति से जुडा हुवा हैं।

गुजरात के लोकसाहित्य के प्रकार

गुजरात प्रदेश का लोकसाहित्य बहुत विस्तृत रुप में हैं। उसको देखने के लिये हमें लोकसाहित्य के जो भाग हैं उसको देखना होगा।

(१) लोकगीत
(२) लोकनाट्य
(३) लोकनृत्य
(४) लोककथा
(५) लोककला
(६) लोकसुभाषित

लोकगीत में गुजरात अपना एक अलग स्थान हैं जैसे कि पहले राजेस्थान गुजरात एक ही हुआ करता था। इसलिऐ आज भी कुछ लोकगीत की रचना हमें मूल राजेस्थान और गुजरात से जूडी हुए मानतें हैं। गुजरात को हम पाँच भाग में रख सकते हैं।

गुजरात का लोकगीत

लोकसाहित्य का बडा भाग लोकगीत के स्वरुप में है। रोजबरोज के जीवनभावो को सरलता से लोकगीत में शामिल है। भाव और प्रकार पर लोकगीत आगे है।

गुजराती लेखक स्व.श्री काकासाहेब ने कहाथा "लोकगीत अे साहित्य नुं मूळधन कहेवाय, लोकवार्ता जेम इतिहास, पुराण अने नवलकथा इत्यादि अभिजात साहित्य नो उग्म छे तेम लोकगीत अे खंडकाव्य अने महाकाव्य वीळा-काव्य अने चारणकाव्य,नाटक अने चम्पु - दरेक रसात्मक कृति नुं मूळ छे" । (७) इसी तरह लोकगीत लोकसाहित्य अभिगन अंग हैं। लोकगीत अलग-अलग रुप में हमें मीलते है।

मनुष्य जब जन्म देता है उसी समय से लेकर मृत्यु तक सभी प्रकार के संस्कारों के साथ तथा संस्कृति के साथ वह चलता हैं। संस्कृति में हमारे जप-तप यात्रा भक्ति आदि का समावेश होता है। मनुष्य के पोष्टश संस्कार भी उसी में ही जाते है, उसी के भी अलग -अलग रुप में होता हे जैसे गर्भधारण का, मुंडण का, हालरडा (लोंरी) का गीत, शादि के गीत भी शामिल होता हैं। जब प्रकृति के गीत भी शामिल हो जाता है।

इस तरह हम बालक का जन्म होता हे तो सभी घर में बहुत खुशी का माहोल हो जाता है। उसी के साथ बालक का लालन पोषण होता हैं। भाई होता है तो दीदी और माँ अपने बेटें को सुलाने के लिये जो लोंरी गाती है उन्हें गुजराती सें हालरडा का गीत कहा गाया है। जब बालक यह गीत मधुर स्वर में सुनता है तो वह अपनी नींद में आकर स्वप्न की दुनिया में नियमित निद्रा में चला जाता है।

बलरडा(लोरी) को उदाहरण यहाँ का देखते है।

((१)लोकसाहित्य विमर्श,जयमल्ल परमार पृ.३३)

“ हाल्य वाल्य ने हांसीनो

रातो चूडो भाइनी मासीनो ;

मासी ग्यां छे माळवे

भाई पगलां रे जाळवे.. हाँ..हां हालां..।

हाला वाला ने हांसी

लाडवा लावशे भाई नी मासी,

मासी ग्यां छे मां वे,

लाडवा करशुं रे हवे.. हां..हां हालां..”।(८)

लोकजीवन में पुरुष प्रधान है परंतु बालस्वरुप में पुत्र हो या पुत्री दोनों एक समान प्रिय होते है। यहाँ पर पुत्री के रुप और भावि जीवन को चित्रीत किया है।

“ बहेन तो मारी रेवा

बेननो मोटे घर करअे विवा

फुलनी वाडी वोडावुं,

मोटा घरनी जान रे तेडावुं ..हालो.”

जब बालक थोडा और बडा होता है, तो वह अपनी मां के साथ रहने के लिये रोता हे, तब मां घर के काम करती हैं तब वह बच्चा रोकर उनके साथ जाने के लिए रोता है तब माँ गीत गाती हैं।

“छाणा नाखवा जेई, मूओ वांहे दोइडो आवे रे, हरकाडीने काईठो, मूओ ढुंइ ढुंइ रडे रे, ”(9)

हारके करीने घेर आवी ओटली अे बेठी रे ‘माय’ माय करी पासे आवी, आवी पडखे बैठो रे” (10)

यह गीत ज्यादातर आदिवासी माँ जो बालक को । “ ढुंइ ढुंइ रडता “ और रोटी मीलते ही खिल खिलाता हसते बालक का मासुम सा चित्र यहाँ पर नजर आता है। यहाँ रोते हुए बालक पर माँ चीडती हुए माँ, हसते हुए बालक के साथ हसने लगती है।

स्त्री कंठे गाये जानेवाले लोकगीतो का पोणे भाग स्त्रीविषयक है। कुमारी के गीत भी मिलता हैं। गोरमा यानी गौरी। अच्छा पति और अच्छा ससुराल प्राप्त करने के लिये गौरी की पूजा करते हैं। गोरमां के बहुत सारे गीतों में पति के विनोद प्रेरक चित्र भी मिलते हैं। व्रत के समय वह गीत गाये जाते है।

“ गौरमां नो वर केसरियो,
नदीअे नहावा जाय रे गोरमा
वांकी ते मूकी पाघडी ने
छायडो जोतो जायरे गोरमा(११)”

लग्न(शादी) जो हमारे में बहुत बडा महत्वपूर्ण संस्कार माना जाता है। वर और कन्या पक्ष को खुश रखने के लिये कोई कमी नहिं रहती है। शादी में बहु और साँस के रिस्ते का भी सुंदर वर्णन मीलता है। कुटुंब, बृहद, परिवार और समाज की खुशी का वर्णन मीलता है। शादी में ही मजाक विनोद के भी गीत मीलते है।

“झीळां झीळां रे मोतीडां, हेमर हाथीडा

अेना सोनेरी पलाण

हाथीडे बेसे रे मारे नानी बहुनो सायबो

उतर्या कसुंबी ने हाट (१२)”

महेदी के समय जो गीत गाये जाते है जैसेकि–

“ महेंदी ते वावी मांडवेने

अेनो रंग गयोरे गुजरात नें

महेंदी रंग लाग्यो ।”(13)

यह गीत आज भी सबकी जुबान पर कंठस्थ के रुप में सुनने को मीलते हैं। स्त्री जब शादी करके अपने परिवार को नया परिवार से जुडती है वही पर कह सुबह पूजा–पाठ करती है। जब वह सुबह तुलसी का पूंजन करती हैं जो गीत गाती है उन्हें परभातिया कहा जाता है जैसे–

“मारे आंगळिये तुलसीनो क्यारो

तुलसीने क्यारे घीना दीवा बळे। ”(14)

गुजराती लोकसाहित्य में ऋतु संबंधी गीत भी प्रसिद्ध है, जब बारीश का मौसम आता हैं। तब सब लोग आनंदमय गीत गाने लगते है साथ में सभी नाचने गाने लगते है। सबकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं होता हे, बच्चे आनंदमय होकर खेलने लगते है, तो स्त्रियाँ भी आनंद मे होकर गाने लगती है। सबसे ज्यादा जो किसान होता है वह खुश होता है। बहु नयें पाक का रोपळ कर के बारीश की राह देखते हैं तब का यह गीत है–

“ओतर गाण्या ने दखळ वरसिया रे!

मेहुले मांड्या मंडाण

आव्यो धरतीनो धणी मेहुलो रे!

नदी सरोवर छली वाव्यां रे

माछली करे हिलोळ, आव्यो.. !"(15)

बालक जब घर में जन्म होता है तब उनकी खुशी अलग सी होती है, परंतु जीन के घर में बालक नहि होता है उनका दर्द बहुत अलग होता है उनको गुजराती मैं "वांझिया मेळा"कहते है उनके उपर भी लोकगीत है–

" पगलीनो पाडनार देजो

लीप्युं ने गूंथ्युं मारुं आंगणु रे,

पगलीनो पाडनार देजो रन्नादे,

वांझियामेळां माडी दोह्यलां रे."(16)

जब बारीश होती है तो पशु–पक्षीभी आनंदीत होते उन पर जो लोकगीत है–.

" मोर बनी थनगाट करे

बहु रंग उमंगमां पींछ पसारीने

बादलसुं निज नेनन धारीने

मेघमलार उचारीने आकुल प्राण कोने कलरव साद रे

मोर बनी थनगाट करे"(17)

हमारे यहां जो तिथी यानी पूनम और अमावस का भी एक विशेष महत्व है। पूनम में चाँद जो पूरा होता है उन पर भी विशेष प्रकार के गीत है –

"शरद पूनम नी रातमां चांदलीयो उग्यो छे,

हे मारुं मनडुं नाचे के मारुं तनडुं नाचे,

अेना किरणो रेलाय छे आभमां..

शरदपूनम नी रातमां..(18) "

पशु– पंखी के उपर भी जो गीत है कि जब चिट्टी की शादी का वर्णन करते हुए गीत है..

“ किडी बिचारी कीडली ने कीडीना लगनीया लेवाय

पंखी पारेवडा ने नोतर्या .. हे.. कीडीने आप्या सन्मान

हालोने कीडीबाईनी जानमांः(19)”

जवानी के पर भी गीत है जब कोई लडकी युवान होती है तो अपने युवानी को कीस तरह संभालना है उन पर गीत है–

“जोबनियw§ आज आव्युं ने काल्य जाशे

जोबनियुं काल्य जातुं रे,शे

जोबनियाने माथाना अंबोडामां राखो

जोबनियुं काल्य जातुं रे,शे”(20)

जब स्त्री अपने रसोई की तैयारी करती है तब उनको बनाने के लिये इंधण की जरुर होती हैं। वह इंधण को यानी लकडी को लेकर अेकठ्ठा करने जाती है वह समय दोहपर का होता है उनपर भी एक गीत है और आज यह गीत एक रास–गरबा के नाम से भी नवरात्री के समय गाये जाते है..

“ इंधणा वीणवा गईती मोरी सैयर..

इंधणा वीणवा गई ती रे लोल

वोळा बपोरनी थई ती मोरी सैयर..(2)

चैतरनुं आभ साव सुनुं सुनुं तो ये (2)(21)”

जब पति कमाई के लिये अपने पत्नी को छोडकर दुसरे प्रदेश में जाता हैं तब पत्नी की मनःस्थिति का वर्णन इस गीत में है–

“हां..मणियारो ते हलु हलु थई रे वियो ने

मुजा दलडां उदासीमां होय रे,

छेल मुजो, वरणागी मणियारो.. के बेन

मुजो परदेशी मणियारो.। ” (22)

पहले के जमाने में स्त्री घर का काम सभी करती थी जब वह दोपहर में घर के सभी अनाज को छांटकने बैठती है तब वह गीत गाती हैं–

“ धंम रे घंटी घंम घंम थाय

झीणुं दळुं तो उडी उडी जाय

जाडुं दडुं तो कोई नव रवाय।

मारा ते घरमां ससरोजी अेवा

हालतां जाय चालतां जाय

लापसी नो कोळियो भरतां जाय”(23)

जब स्त्री अनाज को साफ करने के लिये उनको छाँट देती है जो गुजराती ‘सूपडूं’ यह नाम से बुलाते है। उस समय स्त्री गीत गाती है की–

“सूपडूं सवा लाखनुं , झाटको रे झटको

दाणा अेटला दाणा,पाणा अेटला पाणा

दाणा दाणा मैय रियाना

पाणा पाणा सासरियाना।”(24)

पनिहारी जब पानी भरने के लिये जाती है तब वह पनिहारी गीत में गाती है–

“ मारी शेरीअे थी कानकुंवर आवता रे लोल..

मुखेथी मोरली बजावता रे लोल..

हुं तो झबकीने जोवा नीसरी रे लाल..

ओढ्यांनां अंबर बीसरी रे लोल.”(25)

भाई बहन के प्रेम और रिश्ता दुनिया मे सबसे अनमोल रिश्ता और पवित्र माना जाता है। भाई बहन के प्रेम के साथ उन दोनों में लडाई भी होती रहेती हैं। भाई अपनी बहन को अनहद प्रेम करता हैं उस प्रेम का वर्णन यहाँ पर है..

“वेल्युं छूटियुं रे वीरा वाडीना वड हेठ

धोळीडां बांध्या रे वडने वांकीअे

चार पाँच सैयरुं रे वीरा पाळीडांनी हार्य

वचली पाळियारीअे वीरने ओळिख्यो ”(26)

कोई बडी–बडी बातें करके शादी करते हैं। जब लडकी ब्याह करके जाती है तो उनको सच्चाई पता चलती है तब कहती है..

“अेला तुं तो के तो तो मारे मोटा मोटा बंगला

घेर आवीने जोयुं त्यारे झूंपडी मळे नहि,

तारा टांटीया तोडुं रे, तारा डेबा भांगु रे,

तारो ओटलो कूटुं रे, तारो लाडवो वाळुं रे,”(27)

भाई बहन के प्रेम पर एक और गीत है।

“कोळ हलावे लींबडी

ने कोळ झुलावे पीपळी

भाइनी बेनी लाडकीने भाइलो झुलावे डाळखी। ”(28)

पनिहारी गीत

“छलकातw§ आवे बेडलुं। मलकाती आवे नार रे

मारी साहेली नुं बेडलुं, छलकातुं आवे बेडलुं“(29)

जन्म लग्न, मृत्यु भी एक जीवन का महानुभव है। मृत्यु के समय जो गीत गाते है। 'मरसिया' कहते है। गांव में जब जुवान स्त्री विधवा होती है उसका दु:ख है उनके पति के बिछडने का दर्द होता है उस मन: स्थिति पर गीत हैं।

"आयो आयो अषाढो मेघ रे

बीजळी करे झीळा झटका,

उंची मेडी रे आसमान रे,

त्यारे सूती रे ओतरा अेकली,"(30)

इसी तरह गुजराती लोकसाहित्य में लोकगीत की हारमाला बहुत ही बडी है उनमे से प्रमुख गीत का उदाहरण मैं ने यहां प्रसृत किया है। गुजराती साहित्य मे लोकगीतो का प्रमुख स्थान हैं। यहाँ पर लोकसाहित्य में लोकनाटय का भी एक विशिष्ट महत्व दिया गया हैं।

लोक नाट्य अख्यान

अख्यायन रुप कुछ – कुछ रासो से मिलता है। किन्तु इनमें अन्तर भी है। आख्यायन अधिक मनोरंजक होते हैं और उनके वर्णन इतने लम्बे नहीं होते कि अरुचि उत्पन्न हो जाय। रासों की रचना में उपदेश देने के लिए की जाती थी, किन्तु आख्यानों का अंत इस प्रकार नहीं होता, आख्यानों की कथावस्तु पुराण अथवा इतिहास से ली जाती है। संस्कृत के मौलिक ग्रंथो से भी वे प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इनकी रचना अत्यंत कलात्मक होती है और गुजरात की मध्यकालीन काव्यधारओं में इनकी बडी विशेषता थी। इनकी रचना विभिन्न देशी रागों मे होती है, जिससे गाने मे तथा कंठस्थ करने में बडी सरलता होती है। जब किसी कुशल गवैये द्वारा ये ठीक ढंग से गाये जाते हैं, तब श्रोताओं पर इनका निश्चित प्रभाव पडता है।

प्रच्छन्न रुपसे ही इनमें गति या धर्म की शिक्षा दी जाती है। अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से अनेक धार्मिक कहानियाँ गाकर लोगों का मनोरंजन किया जाता है। इस प्रकार जनता में भक्ति रस का प्रचार और पुष्टिकरण में बडी सहायता मिलती हैं। इन्ही कारणों से आख्यान समाज के निम्नपंथी लोगों मे भी पहुंच गये थे। आख्यायननो की धार्मिक संस्कारो की रक्षा करके सुग्राह्य रुप में भक्ति – साहित्य प्रदान किया। १४ वी शताब्दी से आगे तक, जब गुजरात मुसलमानी शासन में आ गया, हिन्दुओं का जीवन, परम्पराएँ , त्यौहार तथा विचार इन्ही अख्यायनो में सुरक्षित रहे। जो सेवा रासो साहित्यने जैन धर्म की वही सेवा आख्यायन साहित्यने जैनेत्तर हिन्दु समाज की है।

किसी रात घटना के वर्णनको आख्यायन कहते हैं। इसका यह भी अर्थ है कि किसी मुख्य घटना का पूर्ण सविस्तर वर्णन "आ समन्तात् ख्यानम्" (31) मनुस्मृति के अध्याय ३ श्लोक २३२ में कहा गया है कि श्राद्ध समाप्त होने पर मनुष्यको आख्यायन कथा सुननी चाहिए। इससे स्पष्ट है कि आख्यायन का महत्व श्राद्ध जैसे पवित्र कृत्यों में भी था। आख्यायन सुनने की वस्तु हैं, पढने की नहीं। कथावस्तु प्रायः सबकी जाती सम रहती है । अतः कथा आरम्भ होते ही लोग बिना किसी कष्ट के समजने लगते है। विभिन्न पात्र एवं घटनाएं एक–एक करके खुलती चलती हैं और प्रायः सभी रासों की समावेश रहता है। नाटक तत्व भी बडी कुशलता से प्रविष्ट होता है। यह साहित्य केवल घुरे विद्वानों के लिए नहीं वरन् सर्वधारण के लिए लिखा जाता है– इसलिए इसकी भाषा कठिन नहीं होती। गुजराती साहित्यमें आख्यायन यह रुप बहुत पुराना है। नरसिंह मेहता को हम प्रथम आख्यायनकार कह सकते हैं। भालण तथा दुसरोंने इसकी परम्परा जीवित रखी, किन्तु इसका चरम विकास प्रेमानन्द के समय में हुआ। उनके बाद दयाराम तक यह रुप किसी प्रकार बना रहा किन्तु उसके बाद तो धीरे–धीरे यह लुप्त होने लगा।

आख्यायन की रचना विभिन्न देशी पद्यों में होती है। एक आख्यान के कई कडवा तथा प्रत्येक कडवा में कई दोहों के वर्ग होते हैं। एक कडवाके तीन भाग होते हैं। प्रथम सर्ग कहलता हैं, द्वितीय को ढाल और तृतीयको वलण अथवा उथलो कहते हैं। नरसिंह मेहता के तीन आखायान हैं "गोविन्द गमन, सुरत संग्राम, सुदामा चरित्र" इसी प्रकार उनकें जीवन की कुछ घटनाएँ हैं, जब भगवान कृष्णसे उन्हें सहायता प्राप्त हुइ। वे भी आख्यान बद्ध हैं। 'जैसे हारमालानापद', 'विवाह', 'हुंडी' भालण ने कडवा बन्द आख्यायन के रुप विकसित किया। वैश्य कवि भालण का अनुकरण करके कहे आख्यायन की रचना की। प्रेमान्दने नाकर की कुछ रचनाओ का उपयोग नयी सामग्री के रुपमें किया और उन्हें अधिक कलात्मक बना दिया। नरसिंह मेहता का जीवन चरित्र भी आख्यायनों का विषय बन गया है।

गुजराती लोकसाहित्य की परिभाषा देते हुए लिखा गया है कि लोकसाहित्य और शिल्पसाहित्य के साथ रखने की बात करते हुए लिखा गया हैं कि **"शेरडीमां रस करतां छोतरानुं प्रमाण विशेष होवा छतां साकर करतां तेनी जुदी लिज्जत छे तेम लोकसाहित्यने पण पोतानी और लिज्जत छे। लोकसाहित्य प्रत्येनी समाजनी सूग दुर करी ने लोकसाहित्य ना कसुंबाने घर घर नुं पीणुं बनाववानो ते ने मनोरथ** हतो"(३२)

लग्न और अन्य संस्कार विधि के साथ जुडे हुए गीत की रचनाओ मूलभुत व्यक्तिकृत होती है। ब्राह्मण गृहस्थ पद्यकारों ऐसी रचना करके समयके साथ उनके परिवार में विसरती ज्ञाति, गोळ और प्रदेश में जाती हैं। कभी–कभी मूलरुप से मुख्य रुप बदल जाता हैं। तो कभी कभी मूलरूप ऐसा का ऐसा ही रहता हैं। लोकगीत की ऐसी रचना संस्कार गीत की है। प्रेमानंद के ओखाहरण गीत में शादी के गीत के 'मंगळियुं' वरताय गाते है "ऐक झाड माथे झुमखडुं बन्ना–बनडी गीत के रुप में हैं। (लोकसाहित्य माणा मणको ६ पृष्ठ ५११, पुनः संपादित जीवन चरित्र अंतर्गत रचनाओ भागः२ पृ.१११) वहां भाभी, बहन, सासु देवराणी, नणंद, और पति के सगपण लोकगीत का माळखुं है।

कंठस्थ परंपरा लोकगीत का मुख्य लक्षण के रुप है। उनकी असर भीतर और बाह्य देह में होती है। साहित्य कुल के गीत कंठष्ठ परंपरा के मुख्य आधार होता है। केनीथ रिचर्डण कहेता है कि "absence of aceauisiteve motive, are transmission ceaseless contat with tnesoit"(33) यह लोक गीतो व्यापक लक्षण है। लोकगीत जो होता है वह मनुष्य खुद को भावके लिए गाता है नाकि दुसरों को खुश करने के लिए यह खुद के भाव को बया देता है दुसरों कों कैसा लगता है उनका महत्व नहि होता है। लोकगीत दुसरो को आनंद देना,खुश करना शाबाशी देना या प्रशंसा या और कुछ देना लोकगीत का मूलभूत हेतु नहि है। मूलभूत तो वह खूद के लिए ही गाता है।

लोकगीत के लक्षण को देखते हुए पता चलता हे कि:

(१) लोकगीत के रचिना ज्ञात होता है।

(२) वह सहज और स्फूरित होते हैं।

(३)उसमें कला विधान है।

(४)उसमे प्रवृत्ति कि महिमा है।

(५)उसमें मानवहृदय की उर्मिया होती है।

(६)उसमें अनेक में उसे एक प्राण होने के हदय के घबकार है।

(७) उसमें व्यक्तिव्व के सर्वथा अभाव है।

(८) उसमें शब्द,स्वर और गति–तान का समन्वय है।

(९) उसमें कंठोपकंठ चलते आये है और चलते रहेगें मूल में कोई सर्जक या गायक हों, फिर भी उनकी संवेदना सामूहिक और सार्वजनिक स्वरुप होता है।

लोकगीत को भजन के अंतर्गत माना भी जाताहै। ई.स १९०५ पहलीबार अहमदाबाद में प्रथम गुजराती साहित्य परीषद में रणजितराम महेता ने निबंध प्रस्तुत किया था। लोकगीत के प्रकार में पहला स्थान भजन का रखा हैं। 'सोरढी संतवाळी' में झवेरचंद मेघाणी

लिखते हें कि **"लोकसाहित्य ने एक विशाल वटवृक्ष कल्पीओं गीतों, वार्ताओं, टुचका, उखाणा, व्रतकथाओं वगेरे अेना डाळा, पांदडा, पुष्पो ने विटपो कहीअे तो आ भजनो अे अेना आखरी कलारुपी समजी शकाय लोकवाळी नो अंतिम परिपाक आ भजनवाळी छे। वेदो,उपनिषदो अने भागवत जेवा पुराणो थी ज्ञान, अध्यात्म अने आत्मतत्व ने दोही ने जन सामान्य ने स्पर्शे तेवा ताल–ठाल संगीतना कटोरामां लोकवाणी आपणा लोक संतो अे सीधी आपी छे"(34)** भजन और लोकगीत में साम्य भी है और वैषम्य भी देखने को मीलता है। ज्ञान, भक्ति, योग और कथा यह चार मुख्य प्रचारक में भजनवाणी बहती है जीसका सबंध आध्यात्म धर्म, चिंतन और दर्शन के साथ है। लोकगीत में सर्वभोग्य साहित्यकार है, जब भजन में वैराग्य, त्याग, भक्ति, सेवा, समर्पण और साधना की ईच्छावाले संसारीयों की साधु की मंटली के साथ क्रिया कांड के भाग रुपे संभालके रखा है।

लोकगीत में चारणगीत एक जैसा होकर भी अलग–अलग वृक्ष की शाखा होना स्वभाविक रुप से लक्षणों से अलग दिखते है। दोनो की विषयसामग्री सर्वतक्रिया, रचना का उदेश्य और सर्जन अलग है। लोकगीत में सर्जक नहि होता है वह मूल स्वरुप में नहि होता है आगे चलके उसमें बहुत से परिवर्तन भी मीलता है। लोकगीत कवि की रचना को लेके पहेचाना शब्द नहि है। चारणी साहित्य भी लोकगीत की तरह कंठस्थ रुप में मीलता है। आपितुं उनका कर्ता होता है। गीत रचना की अंतिम पंक्ति में ही नामकी रचना मीलती है। कभी – कभी रचना में कवि का नाम नहि मीलता है पर उनकी रचना की प्रति क्रिया से पता चल ही जाता है, वह लोकगीत से अलग ही होता है।

लोकगीत और भवाई गीत में पाठक मीलते है। भवाई मे आने वाले गीत एक ही सर्जक के होते है फिर भी अलग–अलग वेश में अलग – अलग पाठक होते हे। जैसे की

गणेशस्तुतिः

"दुंदाळो दुःख भंजणो सदाय बाल गणेश

अवसर पहेलो समरीये,गवरीपुत्र गणेश

यह साखी रामदेव के वेश में.'

"दुंदाळो दुःख भंजनो सदाय बाल वेश

प्रथम पहेलो समरीये, श्री गवरीपुत्र गणेशजी।" ३५

ऐसे ही अलग अलग ज्ञाति के पाठक भी मिलते है।

लोकगीत हमें सौराष्ट्र में भी मीलते है। लोकगीत हो या लोकसाहित्य की मातृभूमि माना जाता है। लोकगीत में संसार के गीत हमें मीलते है। बालक जब जन्म लेता तब से लेके मत्यु की यात्रा के गीत प्राप्त होते है। उसके साथ–साथ संसारिक के गीत भी मीलते है। नणंद, भाभी, साँस,– ससुर या देवराळी ,जेठानी हो या पति के साथ के सबंध के गीत भी हमें मीलते है।

मनुष्य संसारिक है जब वह संसार में रहेता है तो उनके साथ–साथ सभी प्रजाती का पालन होता है। जब उनका पुत्र ,बडा होता है तो घरमें नइ बहु आती है। जब बहु किसे के घर में पापड की चोरी करती है उनके पर एक लोकगीत भी मीलता है कि:

"पटेल ने त्यां पापड वणवा ग्यांता मा! ग्यांता मा!

एक पापड चोर्यो मां! चोर्यो मां!

घंडी हेठळ घाल्यो मां! घाल्यो मां!

रोटला घडता शेक्योमां! शेक्यो मा!

भेंस दोता खाधो मां! खाधो मां!

डोहे कटको सांभळ्यो मां!

डोहे डांग लीधी मां

एक डांग वागी मां

भस्का केड भांगी मा के साजीमा " ३६

बहु गुप्त रीते पापड की चोरी करती है तब भवाडो होता है। चोरी जब पता चलती है तो बहु ने चोरी की है तो विनोद प्रधान यह रचना में संयुक्त कुटुंब में बहु को स्वतंत्रता नही मीलती है।

लोगगीत में कच्छ के लोकगीत का विशेष रुप मीलता है। कच्छ जो है वह समुद्रतल पर है वहाँ पर अनेक जाति का आगमन हुआ है। विविध संस्कृति की दृष्टी से भी वह विभ्भिन्न है। आर्य, यादव, पवन, शक, क्षत्रिय, तुर्क, ईरानी पहेलवी, गुर्जर, आरंभी आदी। कच्छी लोकगीत अध्येता के लिए लोकगीत संग्रह उपलब्ध नही है। परंतु, अपवाद रुप से संपादित कारायल नामककच्छी लोकगीत संग्रह मीलता है।

हमारे समाज में सास–बहु के रोजरोज के झघडे होते रहेते है एक लोकगीत यहा पर है किः

“बार मूंजी, बापडी केर सले अम्मा!

मां,मां, र! सलेह जोराती वाप

मूंजी रींगणे कारण हुइ रें लडाई!”37

यह गीत में सास उनके बेटे को बताती है कि तेरी पत्नी खाना बहुत खाती है। उनके पति ने अपनी पत्नी को बहुत मारा बहु का पीडा यह गीत में मीलती है।

“ डखण डेस देशथी आयारे द्वारकादास ठाकर,

डाण मंठायोरे शियळे मांडवे रे मथने कंकु डीलडा करायो पीरी है घरजी पीठी करायो रे,

कांठे घिउंजी लपई रंधायो,

सच्चोधी मिंज रंडायो”38

यह गीत में लग्न के उत्साह घर में सर्व खुश है। वेवाई द्वारकादास शादी की तैयारी करते है। लग्न पूर्व की तैयारी दिखाई देती है।

कच्छी लोकगीत में भक्ति गीत का एक उदाहरण मीलता है।

“ उड उड रे पंखीडा उडा.. पांई जो डेस आय बेओ..”39

यह गीतमें आत्मा और परमात्मा की बात मीलती है।

अंबे माँ की आराधना करते हुए भक्तिगीत आता है।

“आया आया मां जा नोरता आया रे माडी आवई आगमजी रात अंबे मां गरबे रमेता आया नों नोरता रे ”40

नवरात्री के समय माँ की आराधना करता हुवा गीत।

कच्छी प्रेमगीत

“आये मेमणीयाणी थइ पोते मेमणीयाणी थइ, छोरी खतुडी आपे मेमणीयाणी थइ, हारुन जा गडांडा न खपे तोके खाउडी मुजे घोडे मथ चडीविइ खतुडी आये मेंमणीवाणी थई ।”41

यह गीत में स्त्री की भ्रमण वृति को दिखाया है। कुंभार ज्ञाति की युवती पैसादार मेमण युवक से शादी करके ज्ञाति बदल देती है।

गुजरात के मध्य गुजरात के खेडा (अभी आणंद) जिल्ले से महिसागर और वात्रक नदी के बिच यानी वासद से महमदाबाद के पूर्व–पश्चिम विस्तार को ‘चरोतर प्रदेश’से जाना जाता है। चरोतर का मतलब यह है कि जमीन का तल चारु यानी सुंदर है। चरोतर के अलग – अलग नाम हैं। ‘सोनेरी पाननो समृद्ध मुलक’ , ‘पश्चिम हिन्दनो बगीचो’, ‘गुर्जरी रससमृध्ध छाती’ आदी नाम है।

‘चरोतरनी चार दिश, तरु तमाकुं ने तूर, नर–नारी दोनु भलां, नीतरे नवला नीर.’42

सौराष्ट्र एवं उ.गुजरात के लोकगीत की साम्यता मीलती है, आपितुं उसमें शब्द की विषमता भी मिलती है। चरोतर के गीत में भाण की मीठाश मीलती है।

सौराष्ट्र के ‘आभ मा झीणी झबुके वीजळी रे, नामके लोकगीत से चरोतर राजपूत समाज में कन्या विदाय का गीत मीलता है।

“तमने वहाली तमारी सासरी हे, अमने वाहला तमारा बोल रे, बेनी नहि रे जवा दउ सासरे रे,”43

लीली पीळी चळानी दाळ नाम का गीत सौराष्ट्र में गाया जाता है। सोरढी गीत में बहुको मनाने के लिये सीधा वर्णन दिया है जब की चरोतर में रुठ गइ बहु को मनाने के लिए ससुर, जेठ, देवर आदी जाते है। फिर भी बहु जाती नहि है। चलकर जब उसका पति आता है तो वह चली जाती है।

“अे तो पगे चाली झांखरामां आव्यो तळावमां रमती ती हुं तो पगे चाली झांखरमां चाली चळावमां रमती ती। ”44

चरोतरी की बहु चालाक होशियार चतुर दिखती है, सोरठी लोकगीत में बहु भोली, अबुंध,अळसमजू दिखती है।

चरोतर के लोकगीत अन्य से अलग दिखते हैं। चरोतर के गाव–नगर के उल्लेख और खूबी भी मिलती है।

चरोतर के लोकगीत में नडीयाद के नाडा– बेडा, खंभात के चुडला, बोरसद की बंगली, आळंद की माला, मेहमदाबाद की मोयण, महुधा की मेमण आदि का उल्लेख मीलता है।

उत्तर गुजरात में महेसाणा साबरकांठा, बानासकांठा और पाटण का समावेश होता है। उत्तर गुजरात के लोकगीत में प्रकृति की शोभा देखने को मीलती है। मनुष्य सृष्टि पशुसृष्टि, वनस्पति सृष्टी अवकाशी पदार्थो का एक अलग ही स्थान है।

“ओतर दाखणनी चढी रे वादणी रे, मारी बईजी ल्यो ; चडीआ चडीआ असाढीया मेघ मारी बईजी ल्यों। ”45

उत्तर और दक्षिण दिशा से बादल गरजते हुए आते है। आकाश में बादल गरजते है। बादल इधर– उधर जाते है। अषाढ के मेघ आकाश में है। अषाढ दिल से बरस रहा है। तालाब

भरजाता है। परदेश जाने वाला पियु एक साल के बाद घर आता है तभी पत्नी या प्रेयसी खुश हो जाती है। मिलन श्रृंगार का चित्र प्रकृति के प्रतीक में आता है।

"आसो मासो शरद पुनम नो चंद जो, अजवाळा आया रे सखी मारा चोकमां।"46

भाई को वहाँ जब लडका आता है। तब बहन उनके घर भाई के बच्चे को ' रमाडवा' यानी खुशी के साथ अपने भतीजे को मीलने के लिए भेट सोगाद लेके जाती है। तभी भाई भी अपनी बहन को इस खुशी के मौकें पें एक साडी देता हैं। आज भी यह प्रथा चालू है।

"मारो वीरो ते पैणवा रे ज्याता
ज्यात्या अजवाळी रातां, लाया लाखेणी लाडी, मारा वीराने छोकरो रे आयो
चालो रमाडवा जइअे" ४७

बहन की साँस जब बहु को टोणा लगाती है तब बहन का भाई जोगी बन जाता है तब बहन कीसको कहती है कोई भी उसका रहा नहि है। किसे मदद माँग सकती है? बहन के नसीब में भाई का प्रेम नहि है। तब बहन भगवान से भाई भाँगती है।

"परभु वीरा विना शी बेनडी? माळ्यो मनखो फरी नइ आवे रे लोल"48

उत्तर गुजरात के लोकगीत मे प्रकृति सौदर्य और समाज जिवन के संबंध में आने वाले सभी गीत विपुल मात्रामें है।

गुजरात के लोकगीत मे दक्षिण गुजरात के लोकगीत का एक अलग ही प्रतिभा है। दक्षिण गुजरात में आदिवासी प्रजा का निवास स्थान है वर्हा की बोली और भाषा भी हमें मराठी कोंकणी मिश्रित गुजराती मिलती है। वहाँ के प्रजा आदि समय से प्रकृति के साथ ही पली बडी है तो उनका लगाव प्रकृति से ज्यादा होता हैं। वहाँ की स्त्री जो काम करती है तब खांडने का कार्य करती है तब उनके हाथों से जो कंगन का अवाज आता है उसे खापणां बोला जाता है। खापणां तीन पंक्ति का होता है। जैसे की–

"खापणां गाउं ने हिचके रे झुलुं, रमत सघळी भुलुं के मारा खापणां" 49

दक्षिण गुजरात में खा§पणां का आचार विचार व्यवहार, मनोभावों ओरता और अनुभव को दिखाया जाता है।

दक्षिण गुजरात के लोग प्रकृति को भगवान का दर्जा देते है। वह देवी पूजक है। प्रकृति पूजक के रुप में जाने जाते है। उनका एक गीतः

"तापी माता! तरव दो तो तरीअे, मरवा दो तो मरीअे के तमारा नीरमां।"50

नदी को माँ का स्वरुप बताया है। नदी के नीर को बोलते है की अगर मरने भी दीया या तरने भी दिया जो भी वह आप के नीर में हमें स्वीकार है।

लडकी जब ससुराल जाती है तब उनके मायके के घर की याद आती है मायके के घर की शोभण और ससुराल की शोभण में बहुत ही फर्क होता है।

"मारे ते घेर सोना रुपानुं कुंडुं अमारा करतांय रुडुं के मारु सासरुं "51

उनके पोशाक के पर भी गीत है

"साडी तो पहेरुं ने कोर तो कोरी मोती हारमां जोती के चंदन चोटला। "52

मृत्यु के पर भी गीत है।

"मारे रे बारणे राती करण नुं फूल आवती छेढनुं मरण के मारे जीतवुं"53

इसी तरह गुजरात के अलग – अलग प्रदेश में अलग–अलग जाति के लोक के साथ अलग–अलग संस्कार रितिरिवाजों का भी अलग – अलग पहलू मिलते है। फिर भी लोकगीत की बात करे तो सभी जगह पर साम्यता मिलती है। गुजरात के लोकगीत बहुत ही बृहद है, परंतुं यहाँ पर हमने मुख्य लोकगीत का समावेश किया है।

गुजरातनी लोककथा / एवमें गाथा

लोकवार्ता यानी परंपरागत जो कथा वार्ता में मीलता है। परंपरागत प्रवाह से वह चलते– चलते अलग–अलग समय अलग–अलग रुप में प्रगट होती वार्ता को लोकवार्ता कहा जाता है।

लोकवार्ता कहाँ से कब से आ रहे है उनका मूल ढुंढना असंभव है। हमारे वैदिक साहित्य में वेदों, पुराणों, सुक्तो, आरण्य को आदि प्राचीन कथानक मीलते है। ऋग्वेद में कथोनकों संवाद में आए तो बौध्य धर्म में कथानकों देखने मीला है। लोकवार्ता उनकी अलग ही परंपरा होती है। जगत में लोकविद्या के अंतर्गत एक वाणी की कला के प्रकार को Folk talel (लोकवार्ता) के रुप में जानी जाती है।

लोककथा में सुननेवाला और बोलने वाला दोनों होते है। उनके साथ – साथ समाज के अलग रुप में मीलती है। लोककथामें बाल, युवान, वृध्ध, किशोर सबके मन में लोककथा का अपना स्थान अलग रुप से महत्व पूर्ण रखा है। इसलिए लोककथा आज भी उतनी ही लोकप्रिय बनी हुई है।

भारत देश को कथा का देश कहा जाता हे। लोककथा परंपरा से प्राचीन है जहाँ–जहाँ लोकजीवन का अस्तित्व होता है। महाभारत और रामायण एक लोककथानको की प्रेरणा से अशिष्ट साहित्य में लोकवार्ता का खजाना मीलता है।

गुजराती साहित्य में लोकसाहित्य का एक महत्वपूर्ण स्थान है। लोकसाहित्य में लोककथा एवंम गाथा एक विशेष रुप में मीलती है। गुजराती लोकसाहित्य की जननी झवेरचंद मेघाणी को माना जाता हैं। झवेरचंद मेघाणी ने अपनी कलम से लिखकर साहित्य को हमारी समक्ष रखा है। झवेरचंद मेघाणी के साथ साथ पुष्कर चंदरवाकर, हसुभाई याज्ञिक, डॉ.हरिवल्लभ भायाणी, डॉ.शांतिलाल आचार्य, जयमल्ल परमार, कनुभाई जानी, मंजुलाल मजमुदार, पिंगणशी भाई गढवी, डॉ.भगवानदास पटेल, खोडीदास परमार, जोरावरसिंह जादव, दोलतभट्ट, दुलेराय काराणी आदी के नाम का समावेश होता है।

गुजराती लोकसाहित्य में लोककथा के संग्रह में सौराष्ट्र का लोकसाहित्य एवं चारणी साहित्य प्राप्त होता है। सौराष्ट्र के साहित्य को झवेरचंद मेघाणी ने किया है। उनके पुस्तक 'सौराष्ट्र की रसधारा (१,२,३,४,५)' भाग में है उसके अलावा 'कंकावटी' जो

गुजराती व्रतकथा का समावेश है। 'दादाजी नी वातो' 'सोरढ ने तीरे तीरे', 'सोरढी बहारवटीया' (१,२,३), 'सोरढी संतो' आदी पुस्तक के मीलती है।

लोककथा में लोको से प्रचलित कथा में ग्राम्यवासी गीरीजन, रणनिवासी के दरियाई किसानो की कथा बनती है। लोककथा मुख्य परंपरा से जिवंत है। उतना ही नही, आपितु प्रदेश–प्रदेश से नया कलेवर लेकर प्रस्तुत होती है। लोककथा बहुत प्रचलित गद्य स्वरुप है। लोककथा के लोकवार्ता शब्द रुठ हे जिसका अर्थ होता है।

"लोकोना कंठ पर रमती, परंपरागत ज्ञाति अे कथानी कंठस्थ कथा के मौलिक वार्ता आवी वार्ताओमां के कथामां क्रमबद्ध घटनाओ के प्रसंगो होय छे।"54

"लोककथा की व्याख्या"

अंग्रेजी के प्रमाणभूत शब्द कोष " **The new of ford Dictionary of English**" में **falk tale** की व्याख्याः

"noun astray originating in popular calture tupiculy passed on by word of Mouth's" 55

Stith thompson

"In the present work we are anfininy our interest to a relatively nurrow scope the tradition prose. Tale the story which has-been handed down from generation to generation either in writing or by words out mouth"56

M.H Abrams

"Strictly detined is a short narrative in prose of unknown authourship which has been transmitted orally".57

आ.हजारी प्रसाद द्विवेदी.

"लोककथा शब्द भारेतौर पर लोक प्रचलित उन कथानकों के लिए व्यवहन होता रहा है जो मौखिक अथवा लिखित परम्परा से क्रमशः एक पेढी से दुसरी पेढी मे प्राप्त होते रहे है। "58

शंकरलाल यादव

"मानव की विश्व के व्यापारी के प्रति जो प्रथमाभिव्यक्ति वाचिक या कालिक हुइ होगी वह एक कहानी रही होगी। वैसे 'में और तुम' इन दो शब्दो में भी कहानी है। "59

डॉ.सत्या गुप्ता.

" लोककथाओ में मानव मन की सब प्रकार की भावनाए, परंपराएँ तथा जीवन दर्शन समहित है। भूत जानने की जिज्ञासा, घटनाओं का सूत्र कोमल व पुरुष भाननाएँ, सामाजिक – ऐतिहासिक परम्पराएँ, जीवनदर्शन के सूत्र सभी लोक – कथा मे मिल जाते है। "60

जशवंत शेखडीवाला:–

"लोकवार्ता सचोट कहेवतो, रुढिप्रयोगो, वेधक अर्थ भाव द्योतक अनोखा शब्दप्रयोगो, विविध बोली, छटाओ, लघुं छतां सुरेख शब्दचित्रो अने मार्मीक संवोदोथी युक्त छे। "61

हरिवल्लभ भायाणी

"भिन्न भिन्न समाजमां लोकसाहित्य अने लोककलामां ते समाज ना जीवननुं अमुक प्रमाणमां साचुं प्रतिबिंब सिलातुं होय छे. पण केटलुंक लोकसाहित्य खास करीने केटलीक लोककथाओ अमुक लोको के देशनी जेम रहेता आखा विश्वनी आखा मानव समाज नी बनी गई होय छे। अेक नी अेक कथा भिन्न भिन्न कळांतरे प्रचलित होवानुं उदाहरळ छे."62

डॉ.हसु याज्ञिक.

" लोककथानुं स्वरुप स्वयं स्पष्ट अने प्रगट छे. अेमां प्राण चेतना मानस के आत्मा गुप्त नथी आ समर्थ माध्यम ज अेवुं विशिष्ट छे के बीजामां आत्मा शरीरमां होय त्यारे लोककथामां तो शरीर ज अेनो आत्मा छे. अे ज छे अेनुं स्वरुप, अेज अेनी प्रकृति"63

जयमल्ल परमार:–

"प्राचीनकाळमां कथा आख्यान शब्द बोलतो आख्यानमां केवळ पणे कोइक धार्मिक काथानक वहेतुं ज आवतुं, कथामां केटलाक कारण नीति के उपदेशनुं तत्व रहेलु आजे धार्मिक उपरांत वार्तातत्वनो पण अेमा समावेश थाय छे. आ वात के वारतामां माणस पोतानो अनुभव, परानुभव, सांभळेली, जोयेली के कलपेली कहेवत वात करे अेमां कथानुं तत्व केटलेक अंशे आवे पण खरुं ने न पण आवे आजे कथा ने वारतामां भेद रह्यो नथी. "64

फ्रेज वोआज (जनरल अेन्थ्रोपोलोजी)

"अनुभुतिओने ज कल्पना द्वारा अतिरंजित करीने अेवा रुपमां रजू करवामां आवे छे के आधुनिक तर्कशिल व्यक्ति माटे ते असंभव अने सामान्य प्रतीत थाय छे."65

पुष्कर चेदरवाकर

"भारतीय भाषाओमां कंठस्थ, मौखिक अने परंपरागत वर्णनात्मक अने घटनात्मक कथाओ लोकवार्ता के लोककथा तरीके ओळखाय छे . लोकवार्तानी राजस्थान मां कहेणी कहे छे. केमके प्रथम लोकवार्ता कथानी हती डायरो बच्चे गढवी लोकवार्ता कथनी हती पछी राजदरबारमां कहेली मंडावा लागी।"66

इसी तरह लोककथा के विद्वानो ने लोककथा की व्याख्या दी है।

लोककथा का वर्गीकरण

लोककथा में पाश्चात्य एवं भारतीय विद्वानों ने एवं गुजराती विद्वानों ने बहुत चर्चा की है। लोककथा का वर्गीकरण युरोप मे शरु हुवा है। इ.स.१८६४ में पहेली बार ही जर्मन लोकशास्त्र जे .जी हाट ने मौंखीक कथाओं के वर्गीकरण का परिश्रम कीया था। जो आज अवैज्ञानिक माना जाता है। परंतु आरंभ का श्रेय हाट को ही जाता है। इसके बाद ग्रीस लोककथा का वर्गीकरण हुआ पर वह लंबे समय टीका नही। उसके बाद अमेरिकि विद्वानों के मत आते है। १९०८ में रोबर्ट.अेच.लूई और आलबर्ट अेल क्रोबरे ने नोध तैयार की। फिर भी इसमें motif की समस्या हो गई। डो.स्मिथ थोम्पसन उसका मुख्य कार्य किया है। उसका वैज्ञानिक पध्धति से वर्गीकरण आवश्यक बना है।

प्राचीन वर्गीकरण में लोककथा के दो भाग है।

(१) कथा (२) आध्यायिका

आनंद वर्धमानचार्य ने तीन भेद बताई हैं (१) परिकथा (२) सफलकथा (३) खंटकाव्य

हरिदभद्राचार्य ने लोककथा को एक मौलिक नवीन करण दिया है।

(१) अर्थकथा (३) धर्मकथा

(२) कामकथा (४) संकीर्णकथा

डॉ.ए.एच.फ्रोर्च लोककथा के दो प्रकार बताए हैं। (१) लोककथा (२) दंतकथा लोककथा के तीन भाग दिए है। (अ) परकिथा (ब) मनोरंजनकथा (ड) पशु प्राणी की कथा

दंतकथा में भ्रमणशील दंतकथा का समावेश किया है। 67

जे.एच.ब्रुन्वाद ने लोककथा के दो प्रकार दिए है।

(१) पुराणकथा और दंतकथा (२) लोककथा 68

डॉ.स्टीप थोम्पसन वर्गीकरण दो आधार को लेके किया है। पहेला आधार स्वरुपलक्षी है, उनको दो भागों में विभाजीत किया है।

(१) सरळकथाओ.

(२) जटिलकथाओं.

दुसरा आधार को लेके लोककथा का वर्गीकरण किया है।

(१) एक काल्पनिक लोक की चर्चा.

(२) अद्‌भूत कथाओं

(३) वीरकथाओं

(४) गाथा

(५) पर्वत, नदी, वृक्ष, पान, पशु, पक्षीकी कथाओं

(६) पंचतंत्र की कथा

(७) पौराणिक

(८) विनोदात्मक हास्यात्मक कथाओं

डॉ.सत्येन्द्र ने लोककथा को आठ भाग में विभाजीत किया है।

(१) गाथाओ.

(२) पशुपक्षी सबंधी अथवा पंचतंत्रीय

(३) परी की कथा

(४) विक्रम की कथा

(५) निरिक्षण गर्भित कहानियाँ

(६) साधु – परीयो की कहानियाँ

(७) कारण निर्देशक कहानियाँ 69

डॉ.कृष्ळदेव उपाध्याय का वर्गीकरण छः वर्गो में किया है।

(१) उपदेश–कथा

(२) व्रत–कथा

(३) प्रेम–कथा

(४) मनोरंजन – कथा

(५) सामाजिक – कथा

(६) पौराणिक – कथा 70

भारत में इ.स १८८४ से १९४८ के बीच के समय में कोइ भी भारतीय लोकशास्त्र कारों ने लोककथा के मूल अभिप्राय से वर्गीकरण करने का प्रयास किया नहि था। फिरभी रिचार्ड टेम्पल का नाम पहला है। डॉ.वेरीयर ऐल्विने इ.स १९४१ में मीस ऑफ मिडल ईन्डीया १९५२में 'मिथल ऑफ ओरिस्सा' प्रसिद्ध किया है। यह दोनो पाश्चात्व लोक संस्कृतिओं थे। यह कार्य डॉ.सत्येन्द्र ने अधिक परिश्रम से आगें बढाया। उसके बाद अलग–अलग भारतीय विद्वानोंने और गुजराती विद्वानोंने वर्गीकरण करने का प्रयास किया है।

डॉ.हसु याज्ञिक लिखित प्रवाह की कथाओ में विविध द्रष्टि से जो वर्गीकरण किया है यह 'अग्निपुराण' अध्याय ३३७ में गद्य काव्य के प्रमुख पाँच प्रकार है।

१) आख्यायिका

२) कथा

३) खंडकथा

४) परिकथा

५) कथानक 71

झवेरचंद मेघाणी

(१)परीकथा

(२)रंजककथा

(३)पशुकथा

(४)स्थानिक दंतकथा

(५)स्थळांतर पामेली दंतकथा 72

पुष्कर चंदरवाकर

(१) दंतकथा, कथावार्ताओं, धर्मकथाओं

(२) जीवनकथाओं वार्ता वृत्तांतो

(३) गीतकथाओं रासडा, गरबा के गरबीवाणी लोककथाओं

(४) अनुष्ठान के व्रतकथाओं

(५) कंठस्थ गद्य–पद्य रुप, प्रेम शोर्य को दिखानी ऐतिहासिक कथा

(६) परीकथाए

(७) रुपकथाए

(८) ओढाओ या द्रष्टांतकथाए

(९) विनोद मनोरंजन कथाए 73

डॉ. प्रहलाद पारेख

(१) धर्मकथा

(२) लोककथा

जयमल्ल परमार

झवेरचंद मेधाणी ने उत्तर समकालीन और सौराष्ट्र के लोकसाहित्य का संशोधन कार्य किया वो जयमल्ल परमारे २५ साल तक 'उर्मि नवरचना'को संपादन करने का बिडा उढाया था। उन्होंने कथा को दों भागो में विभाजन किया।

(१) कल्पित कथा का प्रथम भाग

(१) परिकथा

(२) भूतप्रेत की कथा

(३) शौर्यकथा

(४) बुध्धि चार्तुय की कथा

(२) कल्पित कथा का दुसरा भाग

(१) माणसनी वातो

(२) ऐतिहासिक वातो

(३) दंतकथाओं

(४) संतो अने भक्तो नी वातों

(५) सतीओ अने शूरानी वातो

(६) प्रेमकथाओं

(७) व्रत अने वार तहेवारनी कथाओ

(८) कामण – टुमण नी वार्ताओं

(९) धार्मिक कथाओं

(१०) सागर कथाओं

डॉ. हसु याज्ञिक जी का वर्गीकरण

(१)पुराकल्पन कथा

(२) दंतकथा

(३) कथा 74

सभी विद्वानों ने अपने अपने वर्गीकरण और विभागीकरण देखने से पता चलता है कि यह कहना मश्किल है कि सही, कथावस्तु अलग अलग रुप से लोको के पास से मीलती है। अलग अलग समय से कहानी में अलग पहेलु आते है । गुजराती लोककथा में मेधाणी भाई नी 'सौराष्ट्र रसधार' और 'सोरढी बाहरवटीया' की कथा के मूल लोकमुख से ऐतिहासिक घटनाएँ आजभी लोक वाणी में बहेती है। मेघाणी की 'कंकावटी' में व्रतकथा 'डोशीमांनी वातों'और 'रंग छे बारोट' लोककथा आज भी प्रचलित है।

लोककथा में 'सोन हालामण' 'शेणी वीजानंद' 'राणो–कुंवर' 'लोढण–खीमरो' 'नाग –नागेम' 'मांगाडावाळो' 'आणंद–देवरो' आदी दुहाबद्ध कथाए जो मेघाणी ने

गीतकथाओ में संपादित किया है। 'पंचतंत्र' नीतिकथाए 'सिंहासन बत्रीसी' 'हीतोपदेश' 'वेताळ पचीसी'और अपभ्रंश की जातक कथाएं आदी है। बौद्ध और जैनसाहित्य में से विपुल कथाएं मीलती है। वफाई और बेवफाई, ईन्सानियत और शैतानीयत, खानदानी और खूटलाई, शोषण और सर्मपण, ईमानी और बे–ईमानी तथा सुर और असुर के द्वंद की कथा होती है।

लोक कथा में सती

ईस. १६०२ में कच्छ में बाई वाली दैवी गाँव में सती हुई। ईस.१७७२ में मणसी की भारजा जीवी, भतीजे करमशी के पीछे सती हुई। ईस.१७४७ में मेसरी वाळिया महीआ पीछे उनकी भाभी सती हुई। १७९४ मेंअपने बच्चेके पीछे दशा ओसवाल जाति के एक पिता सागवन हुआ। ईस १६०० से १८८४ तक 'सती ' या 'सता' हुआ उनके कइ उदाहरण मीला है। पशु के उपर जुल्म से बचने के लिए पोरबंदर के घेड विस्तार के मीति गाँव में 'रोजा' नामक पशु के लिए २२ चारण कन्या सती हुई 'वीणा नो मृग' काव्य में राजपूतानी कन्या बीन बजाती है तभी एक मृग आता है। वह मृग को भाग ने के लिए कहेती है। मृग नहि जाता है और राजपुत उसको मार डालता है।

'विधाता ना लेख' कहानी में जन्म–मरण की बात है। मनुष्य को अपना कर्म हर जन्म में भुगतना पडता है। यह बात इस कहानी मैं हे।

सोरठी गीत कथाएं

'सोरठी गीत कथाएं ' मेघाणी जी ने लोकवाणी अखंड कविता दोहामे महिमा बताया है। 'सीम–हलामण' 'राणक रा–खैंगार' 'शेणी–विजागंद' 'राणो –कुंवर' 'लोठण खीमरो' 'मारु ढोलो' और 'नाग–नागमई ' यह १३ मे सें ७ तो वर्षो से रंगभूमि पर नाटक होता आया है। भवाई वेशो तो उनसे भी पहले भजवाते आये है। तो 'बानरो' और 'सूरनो टेमियो' आदी कथा डायरा में आती है।

हम सब 'वेविशाळ', 'तुलसी क्यारो' 'सोरठ तारा वहेता पाणी' नवलकथा मीलती है। तो 'वेळीना फूल' 'युग वंदना' 'कोइनो लाडकवायो' 'कील्लो' 'रविन्द्र विणा' जैसे काव्य संग्रह जो 'सूना समंदरनी पाळे', 'छेल्लो कटोरो', 'शिवाजीनुं हालरडुं', 'कसुंबीनो रंग' जैसे कंठस्ठ कवि के रुप में मेघाणी को सब जानते है।

'सौराष्ट्र नी रसधार' भाग –१ से ५ लगभग सौ से अधिक लोककंठ कथाओ संपादित कि है। यह कहानियाँ को अलग अलग मत से रखा गया है। किसी ने निराळो 'सोरठी' संस्कार देखा हे तो किसीने प्रतापी भूतकाळ' देखा है, किसीने कथामें 'वट, वचन और वेर' की कथा को भी देखा है, कि किसीने 'प्रेम शौर्य की कथाओ को तपासा है। किसीने वार्ता की दृष्टी से तो 'वार्ताकथन रीति' से भी मूल्यकाम करने का प्रयास किया हैं।

एक तरफ नारी का आंदोलन चल रहा था। नारी पुरुष के साथ उनके साथ अलग प्रयास कर रही थी। नारी को अबला कहकर उनकी शक्ति की उपेक्षा की जाती थी। उनका शोषण होता था। अभी वर्तमान समय में हर पल नारी पर होने वाले अत्याचारो, बलात्कारो, अन्याय के किस्से, और आत्महत्या और अपहरण के किस्से सामने आते है। नारी एक प्रदर्शन का साधन हो उसी तरह से देखने को मीलता है। आज के आधुनिक युग में नारी का चहेरा बदल ता गया है । आज संबंध का केन्द्र ही बदल गया है। वहीं आज से दो सदी पहेले के समाज को नारी और उनका समाज पुरुष, स्त्री, प्रेमी, पति, पुत्र, भाई उनके सबंध किस तरह

से थे उनका रसप्रद चित्रण "सौराष्ट्र नी रसधार" में संपादित लोककथा में देखने को मीलता है। उसी समय भी बलात्कार, आत्महत्या सभी होता था फिर भी एक स्त्री किस तरह से अपनी खुमारी, चारित्र्यनिष्ठा, शौर्यभावना, उदारता, पतिनिष्ठा, सेवावृत्ति जैसी भावना को प्रगट करती है। उसकी लोककथा "सौराष्ट्र नी रसधार" में है। मेघाणी ने यह संग्रह मे नारी की भावनाओं को समाज में अपना अलग सहि मूल्यों को बताया है।

'सौराष्टनी रसधार' में संपादित हुई 'रा नवधण' 'वेर' 'एक तेतरने कारणे' 'राजजी गोहिल,' 'आहिर युगलनो कोल,' 'स्त्रीनी बहादुरी,' 'आई,' 'परणेतर,' 'महेमान,' 'कानियो संपडो,' 'ओणियो,' 'पिजराना पंखी,' 'होथल ,' 'जटो,' 'हलकारो,' 'कालुजी,' 'मेर,' 'आंचळ ताळनाळ,' 'मरशियानी मोज,' 'काठियाणीनी कहार,' 'जैसी लोककथाओ,' में नारी व्यक्तित्व
को दीखाना चाहिए।

नारी के विविध रुपों में माता का रुप सबसे श्रेष्ठ एवं वंदनीय माना गया हैं। माँ का जो वात्सल्य होता है, वह किसी का नहि होता है। माँ ते माँ जैसा अनन्व्य अलंकार दिया है। किसी भी युगमें देखे तो मां का बच्चों के प्रति संबंध एक जैसा ही होता है। ऐसे ही श्रेष्ठ भावना को प्रगट करती 'सौराष्ट्र नी रसघारा' में संपादित' 'रंग छे रवाभाई नें' 'रा नवधण' 'एक तेतरने कारणे' 'वेर' जैसी लोक कथा मीलती है।

जान उपर खेल कर लूटारो से पाँच हजार की थैली बचाने के लिए अपने बेटे चोट लगती है तब यह बात रवाभाई की माता दु:खी न होकर खुश होती है। रवाभाई की माँ को यह गौरव होता है कि गाँव की रक्षा के लीए बेटे का बलिदान दिया है। तो 'रा नवधण' में मातृवात्सल्य को बताते हुए जूनागढ में जब राजा का राज नहि रहा सोलंकी राजाने दिवास रसालका कत्ल कर दिया। रानी ने अग्नि स्नान कीया। राणी सोमलदे अपनी बच्ची को रखकर देहांत हुआ तभी देवपात ने उपनी पत्नी को राजा के राजकुंवर को दिया। जब पूछताछ हुई तो

देवपात की पत्नीने राजकुंवर को नहि परंतु अपने बालक को देती है वही पर उस बालक की हत्या हो जाती है। फिर भी रानी ने उस बच्चे के मस्तक पे अपना पांव रखकर चली जाती हे। यहाँ पर राजा के उपर उस स्त्री की निष्ठा के दर्शन होते है।

मनुष्य मनुष्य के लिए मर जाता है यह बात तो साहजिक होती है, पर एक पक्षी के लिए सभी परीवार को युध्ध के मेदान में भेज देती है उनकी बहादुरी पूर्वज लडते हुए, मरते हुए देखने हुए गौरव लेती हुई जोमबाई जैसी माता का अपूर्व व्यक्तित्व के दर्शन एक तेतरने कारणे में देखते को मीलता है।

नारी एक माँ भी है, पत्नी भी है, अपने परिवार के सबंध से जुडी हुइ वेर लोककथा में पेट खुद के बच्चे जैसा खरगोश को मार डालने वाले वेसुर गेलवा की मृत्यु होती है यह बात अपनी पत्नी को बताता है, तब पत्नी भी उसी समय कुछ न बोलकर समय बीत जाने के बाद जब उनका बेटा बडा होता है तभी वह अपने पति यानी पीठाश के फुफा की हत्या पीठाशुं से अपने भाई के मौत का बदला लेने के लिए करवाती है। नारी माता से भिन्न भिन्न व्यक्तित्व और भावना के दर्शन होते है।

नारी का दुसरा स्वरुप पत्नी का है। वह अपने पति का खराब समय में अपने पति के मनोबल बनकर साथ रहेती है। वैसी ही एक लोककथा 'कानीयो झांपडो' माणिया ना मियाणा बंदुक के साथ सुदामडा को मारने के लिए आते है। सुदामडा डर जाता है नगर में बैठने के अलावा कोई नही तभी काठीयाणीओ सुदामडाकी ताकत बन जाती है, झांपडा की पत्नी कहती है 'अेला' छेटो रे! छेटो रे! धुतकारते हुए अपने पति को सूरतान का पान करवाती है। यहाँ पर स्त्री की वीरता वतन प्रेम देखने को मीलता है।

'आई' लोककथा में पति कैसा भी हो अपने पति को ही सर्व मानती है। १६ सालकी काठयाणी की शादी बुढे आदमी से होती है। पति के मुंह में दांत नहि है, वह खाना नहि खा

सकता था एक बार उनकी पत्नी कमरीबाई ने अपने दांत नीकाल दिए गंधारी कृत्य किया। यहाँ पर पत्नी निष्ठा देखते को मीलती है।

'महेमानी' लोककथा में परीवार के साथ–साथ परिवार वालो के सबंधी से भी प्यार से रहने की जीवन शैलि होती थी। पति के अनुपस्थिति में अगर घर पे महेमान यानी सौ असवारो का तीन तीन दीन तक भावपूर्वक आतिथ्य किया था। 'ओणीयो' लोककथा में स्त्री जब शादी करके अपने ससुराल जाती है तब घर की साफ सफाई करने में ही समय व्यतित करती है। मायके वालो को लगता हैं कि उनका पति नथु, उसे खुश नहि रखता है और लडकी की शादी दुसरी जगह करवा देते है। रुपी पूरा दिन नथु को याद करती है बाद में वह आत्महत्या कर देती है। 'दस्तावेज' लोककथा में राजबा के साथ शादी के लिए हजार रुपये माँगे जाते है। राजबा के प्रेम में गरासियो यहाँ–वहाँ से पैसे उधार लाता है। गरासियो को शर्त देते है कि 'ज्यां सुधी हजार रुपयाँ पाछा न उपाय त्यां सुधी पति पत्नि भाई–बहननी जेम रहेवुं' यह बात जब राजबा को पता चलती है तब वह अने पतिके साथ पुरुष वेश में कमाने के लिए नीकल जाती है। राज्य के बादशाह–बेगम की सेवा करके खुश करके वह देवामुक्त बन जाती है।

'आहिरनी उदारता' लोककथा में पति के उदारता को देखने मीलता है। पुरुषत्व होना न होने से पत्नी की शादी दुसरे से करवाते है बाद में सब ठीक हो जाता हैं। ' गरासणी' लोककथा में पुरुष को भी लज्जित करने वाली रुपाणीबा का अदभूत व्यक्तित्व मीलता है। 'काठियाणी नी कटार' लोककथा में चारित्र्य रक्षा के लिए मारती–मरती अदभूत नारी के दर्शन मीलते है।

नारी की करुणदशा को व्यंजीत करती लोककथा 'राणजी गोहील और देपाण' दो उल्लेखनीय है। राणजी गोहील में पति की मृत्यु के समाचार सुनते ही ८४ पत्नीयाँ एक ही साथ कूबे में गीर जाती है। वही दोपाण दे में खेतमें एक ही बैल होने के कारण अपनी पत्नि को

रखता हुआ चारण पति दिखाया है। 'पिंजराना पंखी' में कमल पूजा करने पति–पत्नी का अंधविश्वास का तत्कालीन दिखाया है।

'सौराष्ट्रनी रसधारा' में नारी का जो बहन का रुप है वह विशिष्ट रुप से दिखाया है। धर्म की बहन के लिये 'जटो हलकारों' बलिदान देना है। आई जासल में शुध्ध चारित्र्यशील बहन भाई के सबंध के कारण हो रही गलत फेमी के कारण बहन के आत्मसमर्पण का प्रसंग मीलता है। वही 'काळुजी मेर' लोककथा में चारित्र्य को बचाने के लिए भाई के साथ बहन जाती है उनका हिंमत पूर्व व्यक्तित्व के देखने को मीलता है। भाई–बहेन लोक–कथा में बहन जब भाई को मीलने आती है तब भाई कहेता है की वह नहि है तब बहन भाई नहि होते के कारण मरशियाँ गाती है, तब भाई सून लेता हे और भाई पत्थर बन जाता है वही 'भाई' लोककथा में बहन जब भाई के घर जाती है तब भाई मुंह फुला देता है। भाभी बहन को सीधा ही विदा करने को बोलती है। बहेन घोर अपमान सहन करके जाती है। वही पर गाँव में जोगडो मील जाता है। वह उसे घर ले जाता है वहाँ पर खाना खिलाकर अपने बेटे को बोलना है की बुआ को घर रखकर आ जा।

इसीतरह नारी बहेन के रुप में भी वैविध्यसभर व्यक्तित्व के दर्शन होते है।

भारत में कुटुंब में बेटी का स्थान महत्वपूर्ण होता है। बेटी को बेटे के रुपमें गीना जाता है। बेटी हिम्मतपूर्वक जो कार्य करती है वह 'करिया वर' और 'दिकरो'लोककथा मे मीलता है। करियावर लोककथा में हीराबाई अपने पिता को मीले अकेलेपन को पूर्ण करने के लिए दुसरी शादी करवाती है। पिता को दो बालक का जन्म होता है उसके बाद, बेटी 'करीयावर'लेके अपने ससुराल जाती है। दिकरो लोककथामें में लाखा और देवात के बीच कुछ बात होने से दोनों के बीच दुश्मनी हो जाती है। लाखो आपनी बेटी को घर के बाहर नीकालने में डरता है। एक समय देवात लाखो जब घर पे नही था तब आता है और शोर करता है हिराबाई भाला लेकर बाहर आती है और देवात को मार डालती है।

इसतरह नारी बेटी के रुप में भी एक अलग ही व्यक्तित्व दिखाई दीया है।

नारी प्रेमीका के रुप में "बाळपण नी प्रीती" 'भूत रुवे भेंकार ', 'देहना चूरा,' 'परनेतर', 'सुहिणी मेहार, होथल का समावेश होता है। 'बाळपण नी प्रीत ' लोककथा में शेणी और विजानंद की प्रेमकथा है तो भूत रुपे भेंकार लोककथा में मांगडावाला जो पद्मावति के साथ शादी करने की इच्छा होने से उनकी मृत्युं हो जाती है और वह भूत योनि में जाके पद्मावती से शादी करता है। 'देहनाचुरा' लोककथा में रबारी कुल के राजा और आहिर कन्या की प्रेम कथा दिखाई है। सुहिळी मेहारा में कुंभार की बेटी सुहानी और गोवाल मेहार की प्रेमकथा है ।'परणेतर'में मनसे अजवाली बाई जीसे प्रेम करती थी उसी से ही दातरडु लगता है वह मृत्यु हो जाता है, उनके साथ अजवाळी बाई चिता में सती हो जाती है।

'सौराष्ट्र नी रसधार' एक गौरवशील भूतकाल के साथ उदार, हिंमतवान, बहादूर टेकिला वचनप्रेमी भावनाशील नर–नारी देखने को मीलते है। आज मेंघाणी नही है फिर भी नही है वह कहना मुश्केल है। मेंघाणी कालजयि सर्जक है।

सौराष्ट्र नी रसधार में राष्ट्रिय अस्मिता की कथा में 'कसूंबी नो रंग', 'कोईनो लाडकवायो', 'छेल्ली प्रार्थना ', 'विदाय ', 'छेल्लो कटोरो ', 'छेल्ली सलाम ', 'झंडावेदना ', 'तरुणो नुं मनोराज्य ', जैसी काव्यरचना 'वेविशाळ तुलसी क्यारो ', सोरठ तारा वहेता पाणी वसुंधराना वहालां दवलां जैसी नवलकथाओं 'राणो प्रताप ', शाहजहो। जैसी नाट्यकृति आदि है। 'वर्णवो परमार 'लोककथा में गाँव मे धण यानी गाय की टोली को लेकर मीयाणा चले जाते है उसको बचाने के लिए वर्णवो परमार जाता है। उनकी बहादुरी से गायों टोली को वापस देता है, परंतु वह एक गाय को मारकर खा जात है। जब उसे लेने के लिए जाता है तब मियाणा से लडाई होती है वह मर जाता है। करपडा नी शौर्यकथाओं में सुदामडा पे आक्रमण करने के लिए पीठाराओं का सामना करते करते गाँव का जेठसुर और विणदान जैसे नव युवान

बलिदान देते है। फकिरो– करपडो में वतन की स्वतंत्रता के लिए मर मीटते फीटता वृध्ध पुरुष की शौर्यकथा है।

वतन प्रेम और राज्यनिष्ठ के साथ घनिष्ठ स्वामीनिष्ठा के अनन्य दर्शन 'घेलाशा'भोळो कात्याण 'ओढोखूमाण'. 'मूळूमेर,'जैसी लोककथा मीलती है। ' घेंलाशा 'में घोलाशा अंग्रेज अधिकारी को दश गाँव देने की लालशा देते है। वही ओढ खुमाण में स्वामीनिष्ठ व्यक्ति ओढो खुमाण की कथा है। भोळो कात्याण में स्वामीनिष्ठा व्यंजित होती कथा है। वहीं मूळु मेर में वफादारी के साथ स्वामीनिष्ठा की लोककथा है। गरासणी में मायके जाती राजपूतानी को लूंटारो ने रोको और दैहिक छेडती करने लगे तब चारित्र्य की रक्षा के लिए लूंटारो के साथ लडाई करती है, अंत में मृत्युं हो जाती है। आंचळ ना ताळनारा में रुप सौदंय पे कुद्रष्टि करने वाले जाडेजा सामे खुद की छाती से अलग हुई स्तन को रख देती चारणी स्त्री के मर्यादा शील और हिम्मतपूर्व व्यक्तित्व दिखाया है।'आई कामबाई' में अतिथि के रुप में राजवंशी पुरुष की आंख में कामवासना को देखकर कामबाई खुद के स्तन को काँट कर राजवंशी पुरुष को दे देती है। 'मोत साथे प्रीतडी' २५ वर्षे मरने का संकल्प करनेवाला सबाजी गोहिल जेतपुर के काठीओं की काठीयाणीओं को उठाकर गारियाधार लाता हैं, आपितुं वह स्त्री को मान के साथ रखता है।

मनुष्य की बोली कि किंमत वचन सिध्ध मुल्य की लोककथा 'सिंहनुं दान''कामळीनो कोल', 'चारणनी खोजाधारी' उल्लेखनीय है। सिंहनुं दान लोककथा में चारण चांपोजी परमार से संकल्प करता है कि सिंह का दान देना परमार चोटीला जंगल में से सिंह को कुत्ता बनाकर लेके आता है। जब परमार चारण को देता है तभी उसको अपनी भूल समज में आती है। यहाँ पर वचन सिध्ध के लिए जान कि भी बाजी लगादेते है। कामळीनो कोल में इसरदान जी साँगा से वचन माँगते है कि कामळी साँगां को देगा, परंतु साँगा की मृत्यु हो जाती है। लंबे समय के बाद जब वह कवि जाता है तब साँगा की माँ कहेती है की साँगा की मृत्यु हो

गई है तब कवि नदी के पास जाता है तब साँगा आवाज देता है। मृत्यु के बाद भी वचन सिध्ध करता है।

आदिवासी लोककथा में 'होनोल होटी' जो प्रेम और युध्ध जैसे विषयो पर है। वही 'हालदे सोलंकी' भजनवार्ता की कृति है। 'हालदे सोलंकी' और मृगनयनी कुवरी के बीज बचपन से ही प्रेम था। आपितुं दोनो अलत अलग प्रदेश में रहेते थे। हालदे सोलंकी का प्रेम और आंतर–बाह्य संघर्ष के बाद दोनों की शादी इस कृति का केन्द्रस्थान है। 'नागजी दलजी' भजनावार्ता कृति के साथ साथ प्रेमकथा और युध्ध कथा भी है।

दक्षिण गुजरात में 'कुंकणा रामकथा ' मीलती है। कृति मराठी भाषा में है। कुंकणा ज्ञाति के लोक की कुंकणा भाषा है महाराष्ट्र एवं गुजरात के सरहदी विस्तार मैं बसते कुंकणा कोम के कंठस्थ परंपरा से सुरक्षित भी भील्या भाई रामजीभाई चौधरी तथा श्री रामुभाई रतनभाई पवार से प्राप्त हुई है। कुंकणा रामकथा जो रामचरित– मानस से अलग है।

कुंकणी वार्ता में 'पानदेव' गुंजवाला वार्ता है कुनबी कन्या गुंजवाला से स्वर्ग में पानदेव के प्रेम में थी आपितुं निम्न ज्ञाति के कारण दोनो का विवाह में मुश्केली आती है। पानदेव उसे स्वर्ग में लेकेर जाते है। वहा निम्न जाति उच्चजीति के भेदभाव को प्रेम तत्व से दुर करते है। महाजगनी ओढा में महेनत नुं खावुं मुत्यु एसे मूल्य पे संकेत किया है। राजा अने रानी नी गांठ पे वचन पालक और व्यभिचार न करने की बात बनाई है।

'सेला नी कोला' सामान्य वार्ता है। पंचतंत्र की है, फिर भी बोधात्मक बनी है। किसी को धोखा देने से किस तरह से भुगतना पडता है उसका द्रष्टांत पांडु और लोमडी की मित्रता के प्रसंग को निरुपन किया है। 'भाई बंधी' कहानी में भी मित्रताकी बात कि है। मित्र के लिए अपना जीवन योग्यदान देता है। कुंवर और प्रधान पुत्र की बात है। अस्तुरी सळीत में स्त्री चरित्र वीर विक्रम जैसी वार्ता है। राजा कालसंग जो स्त्री चरित्र की विद्या जानता है। राजा

एक दिन गुप्तवेश से नगर में जाता है। वह देखा है की उनकी रानी का स्त्री चरित्र उसको परेशान करना है। मंत्र–तंत्र की उतरी चडती दिखाइ देती है।

अपकार का बदला उपकार से देते है वैसे बोध देती वार्ता 'नानो भाई ' 'ताजमहल ' वेतियों कहानी में चालाकी से भरे पराक्रमो का आलेखन किया है। 'डोसो' कहानी में चीभडां खाते बंदर को किस तरह से खेतमें से भगाते है। उनका चालाकी पूर्ण बात का निरुपण किया है। 'पंखी' वार्ता में बाज जैसे रखेवाली पंखी की कर्तव्य निष्ठा और वफादारी का निरुपण किया है। टीडो जोशी वार्ता में तुक्का भी कभी कभी अचानक से सफलता दे सकता है।

चारणी साहित्य विमर्श में 'चारण सर्जक परिचय भाग' १ कागआइ महात्म्य 'चारणी साहित्य संदर्भ' जालंधरपुराण–१ 'साहित्याभिमुख''साहित्यने सीमाडेशी''अवगाहन ', 'शब्दोपासना' 'जालंधरपुराण–२' 'साहित्यने'सीमाडेथी अस्मिता अने अनुसंधान जैसे ग्रंथ मीलते है। उनके अलावा 'शब्दोपासना', 'संशप्तक', 'भृंगी–पुराण', 'सोपान', 'चारणी साहित्य', 'वारसो अने वैभव' 'चारणी साहित्य ', 'सर्जन अने भावन', 'चारणी साहित्य पूजा'अने परिक्षा 'चारणी साहित्य विभिन्न ' परिप्रेश्य आदि ग्रंथ है। 'स्वर्ग भूलावु शामळा', 'आसाजी रोटडीया', 'सत स्मरण','सभापर्व ', 'रुकमळिहरण'का समावेश होता है। चारणी सारित्य में नारी, चारणी साहित्यमां वीरस, चारणी साहित्यमां युध्ध वर्णन, गुजराती चारण परंपरा दुहो अमारा देशनो चारणी साहित्यमां राधा, भक्ति आंदोलन अने इसरदासजी इतिहास नु पुनः लेखन अने चारणी साहित्यना दुहामां निहित ऐतिहासिक संदर्भो जैसे चारणी साहित्य के ग्रंथ मीलते है।

गुजराती साहित्य में लोकवार्ता का झवेरचंद मेघाणी कृति कहानियाँ को समाज में आप भी हम भूल नहि सकते है। यह अमूल्य खजाना है जो गुजरात में लोकसाहित्य में लोकवानी में मीलता है। झवेरचंद मेघाणी लोकविद्या संशोधन आदि आज भी हमे प्राप्त होते

हैं। यह लोकवार्ता को पडने के बाद अनंत युग तक माळीण संस्कृति परंपरा धर्म जीवनमूल्यो को बयाने के लिए कैसे कैसे आक्रमण का सामना करते पडा था संघर्यमय परिस्थिति से पसार होकर प्रजा का जीवनशैली और संघर्ष–यात्रा द्रष्टि गोचर होती है।

गुजरात के लोक नृत्यों

मानवी के मनमें आनंद शोक आदि होता है तब शरीर में से होनेवाली उर्मि और लागणीयों तालबध से बाहर नीकलना चाहती हैं। वह समय शरीर के हलनचलन, तालबध्द से होने के कारण 'नृत्य' का सर्जन होता है।

प्राचीनकाल में मनुष्य जब पशुअवस्था में था तब उनके पास भावना और लागणी को व्यक्त करते के लिए वाणी नहि थी। आपितुं शब्द जैसा भी कुछ नहि था। अपने उनकी सभी लागणी संज्ञा द्वारा या पशुं पक्षी के जैसा आवाज निकाल कर व्यक्त करता था। उनके पास कोई साधन नही था। अपने शरीर के हलन चलन से अपनी लागणी को व्यक्त करने लगे, उसमें से नृत्य आया।

लोकनृत्य वह आदिवासी नृत्य का स्वरुप है। लोकनृत्य सीखने के लिए किसी भी प्रकार की तालीम की आवश्यकता नहि है। लोक अनुकरण से शीख लेने है। लोकनृत्य में सभी समूह में सब एक जैसी क्रिया करने का प्रयत्न करते है। लोकनृत्य शरीर के सहज हलन–चलन से या प्राकृतिक जोश से बना होता है।

भारत में सभी राज्य के अपने अलग–अलग नृत्यों है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सौराष्ट्र से आसाम तक लोकनृत्य देखने को मीलता है। जैसा देश वैसा वेश (वातावरण) उनकी असर लोकनृत्य में मील ही जानी है। सब लोकनृत्य एक जैसे होकर भी भाषा, रितिरिवाज, पोशाक और कुदरती वातवरण से अलग असर होने से सभी प्रदेश के नृत्य विविध संगीत और विविध प्रकार में नजर आते है।

गुजरात के पास अपना शास्त्रीय नृत्य नहीं है। अलग– अलग आक्रमणों से गुजरात की प्रजा बाहर से आनेवाले जाती से बनी हुई के कारण स्थिर होकर नृत्य संगीत जैसी कला के विकास को समय नहि मीला। वही, गुजरात में जैन धर्म की प्रबल असर के कारण यह कला को विकास होने का मौका नहि मीला। जैन धर्म में संगीत और नृत्य जैसी कला को सन्मान का स्थान नहि मीला है। तभी गुजरात के पास सभी राज्यों की जैसी शास्त्रीय नृत्य की प्रणाली नहीं है। परंतु आदिवासी नृत्य की लोक–नृत्य विशिष्ट रुप से स्थान है।

आज भी लोकनृत्यो मुख्य रुप से 'गरबा – गरबी', 'रास – रासडा',टिप्पणी के मटकी वह अस्तित्व में है। यह लोकनृत्य के शास्त्रीय नृत्य की पृष्ठ भुमि धर्म रहा है। समाज उनके अलग अलग विभाग का दर्पण बनता गया है।

श्री कृष्ण के समय से नृत्य की शरुआत हुई और उसके बाद नृत्य आगे बढा। वह समय पंजाब, दिल्ली, मथुरा में तो नृत्य था ही परंतु सौराष्ट्र में उसके बाद आया।

ईस.४ सदी में सोमनाथ मंदिर में नृत्यकार देवदासीयों थी आपितुं वह दक्षिण राज्य की तरफ से मंदिर में अर्पण हुई थी। सिध्धराज और उसके पिता कर्णदेव शिवभक्त थे इसलिए नृत्यकला को वह समय में कुछ नुकशान नहि किया। कुमारपाल के समय में नाट्यकला, शिल्पकला, चित्रकला आदि को प्रोत्साहन मीला पर नृत्यसंगीत को महत्व मीला हो वैसा कुछ देखने को नहि मीलता।

१२९८ में अल्लाउद्दीन खिलजी के आने के बाद गुजरात के राजकरण में खुन खराबा शरु हो गया। ईसलिए गुजरात में नृत्यकला या संगीत कला को प्रोत्साहन मीला नहि। गुजरात में देखने को मीलता लोकनृत्य व नैसर्गिक शक्ति के कारण बच गया । उस में ढल गया था इसलिए वह ग्राम्य विस्तार में सुरक्षित है।

श्री कृष्ण के पौत्र अनिरुध्ध आसाम के शोणितपुर के राजा बाजासुर की कन्या उषा के साथ शादी की उसी तरह से भारत के पूर्व के प्रदेश का पश्चिम प्रदेश के साथ सांस्कृतिक सबंध बनाया था।

सांस्कृतिक द्रष्टि से यह शादी सुखमय रही। उषा द्वारका में आकर लास्य नर्तन वहाँ की गोपकन्या को शिखाया था और वह अनेक प्रदेशो में विस्तार हुआ। इसलिए महाभारत काल से वह ई.स. १६मी तक श्री कंठ कवि के समय सौराष्ट्र लास्य नर्तन के लिए प्रख्यात है।

रास

रास एक मुख्य लोकनृत्य है। रास के दो प्रकार है। (१) हल्लिस रास (२) दांडीया रास है। आज दांडीया रास ही प्रमुख रहा है। पहेली बार ईस प्रकार के रास पुरुष साथ में करते थे। कारण श्री–कृष्ण की लीला के रास गोप–गोपीयो साथ में मीलके करते थे। मुस्लिम काल में शासको केडर के कराण स्त्रीयां रास खेलती नही थी। सौराष्ट्र में १४ मी १५ मी सदी से नरसिंह भगत, मीरा आदि जैसे के कारण वैष्णव धर्म के संस्कार श्रीकृष्ण के रास को जिंदा करने के लिए प्रयास हुआ।

सौराष्ट्र की सबसे ज्यादा महत्वपुर्ण नृत्य रास ही माना जाता है। दांडिया सहित होता है। जैसे जात का वर्णन श्री कृष्ण की लीला के लिए करने को आया है। वही वर्णन यह रास में देखने को मीलता है। नवरात्री, शरदपूर्णिमा आदि तहेवारो में यह नृत्य गोलाकार में होता है। नर्तनकारो दोनों हाथ में दांडिया होते है। यह दांडिया जोड जोड के साथ ताल बध्ध से ठोकी या कभी कभी जोड बदलकर या तो अलग–अलग जोड की अदल बदल करके गोल घुमकर यह नृत्य होता है। यह रास वांजित्रो में ढोल या तबला और बडे मंजिरा या शहनाई का उपयोग होता है।

सभी लोकनृत्य की चाह समाज को है और लोकनृत्य को पादर या चोरा चोक मे से लेके उसे रंगभूमि तक का प्रदर्शन बनाया है। नई नई कल्पना को स्थान प्राप्त हुआ है। रास

में गाने वाले को अनुलक्षी में आकार प्रकार भी रचाया गया है। जैसे कि, गीतो माताजी का वर्णन हो तो माताजी के प्रतीको में धजा, स्वस्तिक, त्रिशुल आदि आकार के शम खेले जैते है। कान–गोपी का गीत हो तो कृष्ण बंसी बजाता हो वैसी रचना बन जाती है। पठार के रास में समुद्र की स्मुर्ति आदि अवश्य देखने को मीलता है तो कोळी कोम व्यवसाय शिकारी हो तो चांपल्य भी अचूक द्रश्यमान होता है

गोफ गुंथन

रास जैसा पर थोडा अलग प्रकार का लोकनृत्य है। इस में रंगीन कपडे की पेटी (संम्बुक) या मोटी रस्सी को छत के उपर कोई एक छेद में से पसार करके ईकठ्ठा यानी (गुच्छा) में बांध कर उसका एक भाग एक छेडा नीचे समूह में गोल खडे रहे नृत्यकारों एक हाथ में पकडकर दुसरे हाथ में दांडिया पकडकर वेल आकार में अक अंदर और एक बहार से जाके गोल घुमते घुमते, गीत गाते गाते नृत्य होता है। यह नृत्य में हो रहा व्यवस्थित हलन चलन के कारण उपर रहे दोरियों की सुंदर गूंथणी बनती है। फिर नृत्य करते उलटी दिशा में जाके नृत्य करते करते गुंथणी छूटती जा रही है। गूंथणी यह नृत्य का मुख्य अंग बन जाता है। उनकी सुंदर रंगबेरंगी गूंथणी और छूटती गूंथणी दोनो नृत्य के साथ बहोत ही आकर्षक लगती है। यह नृत्य मूख्यत्वे पुरुष ही करते है। फिर भी अब स्त्रीयां भी भाग लेती है।

रासडा

रास में नृत्य ही प्रधान होता है, जब रासडा में संगीत होता है। गरबा जैसा से एक प्रकार रासडा है। उस में सामान्य विषय को लेकर गीत बनता है। यह गीत गाते गाते स्त्रीयां नृत्य करती है। एक गाते है तो दुसरी वह गीत का गाती है। नृत्य में स्त्रीयां गोल घुसके तालीयां और चपटी भी बजाती अलग अलग आकारो बनाकर नृत्य करती है। कोळी और भरवाड कोम की

स्त्री– पुरुष साथ मे् रासडा गाते है। रासडा में मोरली, शरणाई, पावो, झांझ, करताल, मंजीरा, जैसे धनवाद्यो तथा ढोल, ढोलक, खंजरी जैसा, चर्म वाद्यो का प्रयोग होता है।

गरबोः–

देवी की मानता के रुप में प्रगटाव्यो में नौ दिन का अखंड दिवो गरबा कहलाता है। यह दिपक को छीद्रो वाले मटके में प्रजलित करते है। यह दीपक बुज न जाय ईसी प्रकार से सुरक्षित रखा जाता है। यह गरबा को सिर पे लेकर स्त्रियां गीत गाके नृत्य करती है। यह उनकी रीत है। गरबा यह शक्ति की निशानी है। समय के साथ सिर से गरबा वर्तुळ के रुप में रखा गया उसके आसपास स्त्रियां ताली और चपटी से विविध रचनायें करके गरबा गाने लगती है। यह गरबा के गीत देवी को ध्यान में रखकर गाया जाता है। जैसे बहुचर माता, अंबे माता, कालका माता आदि प्रकार के गरबा गुजरात में देखने को मीलता है।

गरबा में माँ अंबा की पुजा की जाति है। जब अंबा मां नें महिसासुर राक्षस का वध किया तब से यह गरबा खेले जाते है। राक्षस और अंबा माँ का युध्ध नौं दिन चला उससें अलग–अलग माँ का रुप लेके आराधना करके गरबा कें रुप में गाया जाता है। गरबा आसो महिना में शरु होते हे, वेसे साल में चार नवरात्रि आती है। दै नवरात्रि गुप्त होती हे और दो नवरात्रि में आराधना होती है। एक ऋतु परिवर्तन पर मनाया जातै है । नवरात्री अश्विन माह में आने वाली नवरात्रि को शारदीय नवरात्र कहा जाता है। यह शरद ऋतु के समय आने वाली नवरात्रि है। ईसके अलावा चैत्र महीने में मनाई जाने वाली नवरात्रि का वासंतिक नवरात्रि कहा जाता है। वहीं माध महिने में मनाई जाने वाले नवरात्रि शिशिर ऋतु में आती है। उसके अलावा अषाढ शुक्ल पक्ष आने वाली नवरात्रि वर्षा ऋतु में मनाई जाती है।

सहि गरबा की शरुआत ऐसे हुई पर समय के साथ उसका विषय भी बदल गया। सामाजिक, ऋतु, कृष्ण, आदि अनेक विषयो पे बने गीत के साथ यह नृत्य होता रहा। ताली और चपटी की जगह अलग साधन का प्रयोग हुवा है। खंजरी, मंजिरा, दिवानी थाली, बोघरणा आदी अलग –अलग चीज का उपयोग करके स्त्रीयां यह नृत्य करती है। इसको सब गरबा के नाम से जाना जाता है। यह सब नृत्य के रुपांतर गरबा नृत्य में से हुवा मनाया जाता है, आज 'गरबा' के नाम से जाना जाता है।

गुजरात में गरबा लोकनृत्य के अंग के साथ–साथ शिष्ट साहित्य और संगीत के नयें तत्वों को प्रदशित होता है, जब गाँव में या समाज के अपने थर के अलावा वह लोकवाणी में प्रस्तृत होता हे। शिष्ट साहित्य के साथ बुध्धिचातुर्य भी मीला और नर्तन के अब नयें आकार प्रकार में शामिल हुआ। ताल का विविधता भी मीली। यह समाज के सर्वमान्य स्त्रीवर्ग और सर्वस्तरो से स्वीकारेल गरबा लोकप्रिय लोकनृत्य का प्रकार है।

गरबा में स्त्री एवं पुरुष जो परिधान होते है वह 'चनिया चोली' होती है। पुरुष का जो परिधान होता यह कुर्ता एवंपायजामा होता है। गुजराती में उसे 'केडियुं' भी बोला जाता है। गुजरात के यह 'गरबा' लोकनृत्य होता है वह 'बडौदा' में प्रख्यात होता है। इनका उत्साह इतना है कि, विदेशी भी यह नृत्य के चाहक बन जाते है। यह लोकनृत्य को प्रमुख नृत्य के रुप में भी माना जाता हे।

गरबी

गरबो वह स्त्री का नृत्य है तो गरबी वह पुरुषो का नृत्य है। सीधे पैर और तालीओ के समूह में गीत गाते गातें पुरुषों वर्तुळ में यह नृत्य करते है। गुजरात के भक्त कवि दयाराम जो कृष्ण को उद्देश्य से गरबी की स्थापना की थी, वल्लभ कवि भी माता की गरबी बनाई है।

टिप्पणी नृत्य

मजदूर वर्ग को जीवन के साथ बंधा हुवा यह नृत्य असल में सौराष्ट्र के चौरावड की कोळी स्त्री का है। 'टीप्पणी' एक ऐसी लकडी है, जिसे के नीचे के अंत भाग पर भारी चोरस आकार गोलाकार लकडे का कटका लगाया होता है। कोई घर बन रहा होता है। वहां जमीन पर छो बिठाने के लिए यह टीप्पणी से ठीपने का कार्य होता है। मजदुर स्त्रीयां यह काम करते समय ढोल के साथ साथ गाके तालबध्ध से अपनी टिप्पणी ठोकती हुई नृत्य करती है।

राजकोट की भील बहनों की टीप्पणी आज भी देखने को मीलती है। वह अनेक प्रकार प्रदर्शित करती है। हांलाकी गति गीत नृत्य शुरु होकर नये नये रुप के साथ खेलते है खुलकर गीत गाते, नृत्य, वाद्य आते है तो वह और उत्तेजित हो जाते है। तीन की रमझट की भाषाओं बयान करना मुश्किल है। लोकनृत्य द्रश्यकला है। भाषावर्णन से उनको पूर्ण न्याय नही दे शकते। गीत के शब्द, स्वर का गाना, बटनो को गले की हलक, शरणाई के साथ साथ टीप्पणी के टीप–टीप खटकनें की एक साथ होने वाला ताल और सूर का वय होना उस समय रंग में नर्तक और प्रेक्षक भी रंग जाते है। पुराने रजवाडा के समय में रंगो को माननें के लिए राजाओ मोट में पड जाते है और रंगत बन जाती है। सौराष्ट्र प्रदेश के अलग अलग भागों में थोडे से अलग अलग रुप के साथ देखने मौका ही अलग होता है। आज यह टिप्पणी अब रंगभूमि का एक गहेना बन गया है।

पढार नृत्य

पठार नृत्य वास्तव में सौराष्ट्र का मुख्य नृत्य का प्रकार बता सकते है। पठार सौराष्ट्र की माछीमार जैसी कोळी की आदी जाति है। भाल प्रदेश में नळकांठा विस्तार में यह प्रजा रहेती है। यह नृत्य में समुद्र के तट पे रहनेवाले की जिंदगी का हुबहु वातावरण देखने को मीलता है। पठार युवको के हाथ में मंजिरा लेकर गोलाकार में नृत्य करते दो पैर लंबा करके बैंठ कर हलेसा (घूमका) लगाते हो वैसा अभिनय करते है। कभी–कभी आधे घूंटनो के बल पर खडे होकर मंजिरा बजाते है। यह नृत्य पुरुष ही करते है साथ में समूह में गीत गाते हैं ।

साथ में वाजिंत्रो में एकतारो, तबला, बगलियुं और बडे मंजिरा भी बजाते है। यह नृत्य पठार युवानों में जुस्सा को प्रगट करता है।

सीदी नृत्य

यह सीदी प्रजा मूल आफ्रिका की मुजफ्फर तीसरे के १६ मी सदी में उनको आफ्रिका से बुलाया था। गिरनार के जंगल में जंबुर गाँव में ५०० से ७०० सदी की बस्ती है। यह गाँव सौराष्ट्र के छोटे आफ्रिका के नाम से जाना जाता है। यह नृत्य में नृत्यकार गोलाकार बनाते है और गोलाकार के बीच में एक नृत्यकार आके नृत्य करता है। नृत्य करते नृत्यकार ही ढोलक बजाते है। खुद कें और शरीर को मुडके नृत्य करते है। लोकनृत्य का यह एक अलग ही प्रकार है।

हाली नृत्य

यह नृत्य मुख्यत्वे सुरत जिल्ले के दुबला जाति के लोग करते है। वह यह नृत्य में अलग–अलग कहानी के प्रसंग होते है। यह नृत्य में दो भागों में होता है। एक स्त्री और एक पुरुष एक दुसरे के कम्मर पे हाथ रखकर नृत्य करते है। साथ में ढोल और थाली यो पुंगी अथवा भूंगली के सूर काठी के साथ देते है। पुरुष सिर पे सफेद पाघ बांधते है और कछोटा करके धोतिया पहनते है। बाकी का शरीर खुल्ला रखते है। स्त्रीयों रंगबेरंगी साडी का कछोटा बांधकर पहनते है।

अन्य नृत्यों के प्रकार

पंचमहाल के दाहोद के आसपास के प्रदेश में आदिवासी नृत्य देखने को मीलता है। यह नृत्य तलवार से युध्ध करते हो वैसा नृत्याभिनय भास होता है। युध्ध उनका मुख्य प्रसंग है। तीनी चिचियारीयों करते पुरुषो के सिर के सफेद पाघ और काली बंडी पहन के यह नृत्य करते है। इसी प्रकार नर्मदा के किनारे पे प्रदेश का आगवा नृत्य भी प्रख्यात है। जिसमें पुरुषो लंबी लकडीयों पर घूंघरा बांधकर लकडी का एक भाग हाथ में रखकर नृत्य करता है।

धोलका जिल्लेमें पठार नृत्य देखने को मीलता है। हाथ में दांडिया जैसी लकडीयों को खकर पुरुषो गा कर यह नृत्य करते है। यह नृत्य में उपयोग होती लकडी का आधा भाग धातु का और आधा भाग लकडे का होने से दो प्रकार के अलग–अलग आवाज निकालकर एक–दुसरे के साथ ठोककर यह लोक नृत्य करते है।

कोळी का नृत्य

पठारो जैसा कोळीओ का नृत्य में जलकांठा का संस्कार नही है। कोळिओ उत्सव के समय आँखों में सुरमाँ, सिर पे लाल नधरासियो, आंटी से गोल पाघडी और कमर पे रंगीन भोट, हाथ में दो दो छत्रीयों के झूलाकर जाते है और नृत्य में सामेल हो जाते है। यह कोळीओ रंगलिापणुं देखना हो तो तरणेतर के मेलो में देखनो को मीलता है। यह मेला कोळीओं का ही माना जाना है। कोळीयो भी तीन तीन ताली का रास में खेलते है।

मेरठु का नृत्य

मेर जाति का नृत्य का लडायक, खमीर और आक्रमक और अलग निराला है। ढोल और शरणाई भी उसमें रस्तान को बिसदावते हो वैसा लगता है। मेर लोक में पैर की गति तालबध्ध होकर भी उसमें तरलता कम है। शीस्तबध्ध सिपाही जैसे उनके पैर उठाते है। तीरछा, तोबला और दांडिया तलवार के सडके की तरह घुमाते है। एक साथ चालीस चालीस आदमी के मरदानगी भरे मरोडे खींचता रहता है। कभी कभी एक से डेढ मीटर जीतना उपर वह उछलते है तब एक अद्‌भूत ही द्रश्य देखने को मीलता है।

बनासकांठा का लोकनृत्य (मेरायो)

'मेरायो' लोकनृत्य बनासकांठा के वाव तहसिल एवं अन्य विस्तार के लोक–मेले में देखने को मीलता है। यह नृत्य में ठाकोर कोम को लोग भाग लेते है। सरवर अथवा झूझाणी नाम के लंबे घास में से तोरण जैसा झूमखा गूंथ के यह मेरायो बनाया जाता है। यह

झूमखा को 'नागली' कहा जाता है। एसा आदी झुमखा मैं एक लकडी को आस–पास एक चोरस पाटीया के आधार पे लटकाया जाता है। उपर चार पहीयो पे मोर–पोपट बिठाया जाता है। सब झूमखो के बीच दिया होता है ऐसी व्यवस्था होती है। एक ईन्सान कम्मर पे तोहफे में नाळियेर काछली बांधते है। उसमें मेरायो को ठहरने को रखा जाता है। उसके बाद उसके मोर तोता घुमने लगते है। यह मेरायो घुमती टोली मेले के स्थल पर जाती है। साथ में कुफवा के ढोल बजाते है ईस तरह मंडली आती है, बाद में खुल्ली तलवार से पटाबाजी खेलते पटादार और पडछंद तथा पातळिया दो मोटीयार एक दुजे पे वार करते हे और खुद का बचाव करते है। घुंटनो के बल बैठे जाते है, आगे बढते है, पीछे जाते है, सो जाते है चिते जैसे छलांग मारते है, एक दूजे की गरदन पे तलवार लगाते है, देखने वाले का हृदय रुक जाता है। तब अचानक से दोनो लडवैया आमने–सामने एक–दुजे को भेट जाते है। यह समय हुडिला गाया जाता है। यह हुडिला बनासकांठा विस्तार का शौर्य गान है।

डांगी नृत्यो

पूर्व गुजरात का पूरा विस्तार आदिवासी विस्तार है। उपर साबरकांठा विस्तार, बीच में पंचमहाल विस्तार, अंत भाग में डांग विस्तार भी आदिवासी लोक की संस्कृति रीति–रिवाज, नोखी ओर अनोखी डांगी नृत्यो चिणो तरीके से जाना जाता है। 'माळीनो चाळो' 'ठाकर्यो चाळो' आदि। डांगी नृत्य वो २७ जात के ताल है। वह चकली, मोर, मरधी या कछुआ जैसे पंखीयों या प्राणीयों की नकल नृत्य के स्वरुप करके दिखाते है। डांग के महाल विस्तार का गीच जंगल की खीण में आया हुवा गाँव हो, चांदनी रात हो और महुडा में से गुड का बनाया हुवा शराब मीलता हो तब डांगीयों साथ साथ में बारा बारा घंटे नृत्य करते है। 'माळी नो चाळो' नृत्य में डांगी पुरुषों गोलाकार खडे होते है। उनके कंधो पे दो अलग अलग स्त्रीयाँ एक एक पैर होते है। वाणी ढोलक, मंजीरा नाम के वाजिंत्रो से सुर बहेते हो तब स्त्री

पुरुष नाचने लगते है। 'माळी नो चाळो' नृत्य खतम होने आने वाला हो तब स्त्रीर्या पुरुषो के कंधे से जमीन पर उतर जाती है।

आगवा नृत्य जो भरुच तहसिल के आदिवासी यह नृत्य करते है। आगवा नृत्य में मंजिरा और पुंगी जैसा संगीत वांजित्रों को उपयोग होता है। आगवा नृत्य हाथ में लकडी रखकर किया जाता है।

शिकार नृत्य धरमपुर के आदिवासी करते है। यह नृत्य में तीरकांमठा और भाले के साथ चिचियारी बोलकर नृत्य करते है।

मरची नृत्य गुजरात के तूरी समाज की स्त्रीयां द्वारा होता है। यह नृत्य में हाथ और पैरो की चेष्टा करते है।

रुमाल नृत्य महेसाणा तहसिल के ठाकोर एवं पछात वर्ग के लोग रुमाल नृत्य करते है। पुरुष हाथ में रुमाल बांधकर नृत्य करता है।

हींच नृत्य सौराष्ट्र में जब रांदल मां को बुलाना पडता है तब जो नृत्य करते है उस नृत्य को हींच कहेते है। हींच स्त्रीयों द्वारा रादल मां की स्तुती करते करते हींच लेते है। हींच को हमची नृत्य भी कहाँ जाता है।

गुजरात के लोक नृत्य में समाज की रीत रिवाज का एक प्रभाव मीलता है। मुख्यत्वे गुजरात में गरबा ही प्रमुख लोकनृत्य माना जाता है, आपितुं अलग–अलग प्रजाति होते से अपने अलग –अलग रिवाजों संस्कृति के कारण हमें बहुत सारे लोकनृत्य देखते को मीलते है। यहाँ पर समाज में रहनेवाले लोगो की आस्था के साथ–साथ संस्कृति से लगाव है वह देखने को मीलता है। लोकनृत्य को धार्मिकता को साथ भी देखा जाता है।

इसी तरह यह केवल नृत्य न होकर आस्था, समाज, सांस्कृतिक से जुडे हुए लोगो की भावना का दर्शन का दर्शन होता है।

लोक कहावते (लोकक्तियाँ)

ग्रामिण जनता अपने दैनिक व्यवहार में अनेक लोकक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ, सूक्तियो आदि का प्रयोग करती है। इससे उनकी वचन–चातुरी का पता है चलता है। लोकक्तियाँ के प्रयोग से किसी उक्ति या कथन में शक्ति आ जाती है और श्रोताओ पर उसका पक्ष प्रभाव पडता है। मुहावरो के द्वारा भाषा में चुस्त आती है और उसका स्वरुप सुन्दर बन जाता है। मन बदलाव के लिए पहेलियों का व्यवहार किया जाता है। बालक गण समुदाय में अनेक प्रकार की पहेलियाँ उपलब्ध होती है जिनमें बुध्धि का व्यायाम पाया जाता है।

बच्चा जब छोटा हाता है तब उसकी माता उसे पालने में सुला कर लोरियाँ गाती है। ईन लोरींयो का उद्देश्य मनोहर संगीत पैदा कर के बालक के निंद्रादेवी की गोद में देता है। बडे होने पर बालक अनेक प्रकार के खेलो को खेलते समय विभिन्न गीत गाते है। जानता के जीवन में ये लोकक्तियाँ, पहेलियाँ, सुक्तियाँ, मुहावरे पालने और खेलने के गीत बिखरे पडे है। अतः इनको 'लोक –सुभाषित' का नाम दिया गया है।

लोकक्तियाँ अनुभवसिध्ध ज्ञान तक निधि है। मानव मे युग युग से जिन तथ्यों का साक्षात्कार किया है उनका प्रकाशन इनके माध्यम से होता हे। ये चिरकालीन अनुमूत ज्ञान के सूत्र है। शताब्दियों से किसी जाति की विचारधारा किसी ओर प्रवाहित हुई हो, यदि इसका निर्देशन करना होतो उसे जाति की लोकक्तियाँ का अध्ययन आवश्यक है।

लोकक्तियाँ की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। उनकी वेदो में भी उपस्थिति है। उपनिषदो में भी लोकक्तियाँ की कमी नहीं है। संस्कृत भाषा में प्रचुर मात्रा में मीलती है। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रंथो में लोकक्तियाँ का बडा ही सुन्दर प्रयोग कीया है। जिससे उनकी भाषा बडी प्रभावोत्पादक हो गई है। "प्रियेषु सौभाग्यकला हि चारुता" को लिखने वाला कवि यह अच्छी तरह से जानता था कि 'रिक्त सर्वो भवति हि लधुःपूर्णता गौरवाय।'

पंचतंत्र, हितोपदेश आदि ग्रंथोमें नीति सबंधी उक्तियो का प्रयोगकिया गया है। 'आयसैः आपसं छेद्दम्यं्' अथवा 'कण्टकेनैव कण्टकम्' जिन में नीति या उपदेश भरा पडा है।

हिन्दी भाषा में लोकोक्तियों के संग्रह मे बहुत कम मीला है। सन् १८८६ में फेलन नें हिन्दी कहावतों के सबंध में अपना प्रसिध्ध ग्रंथ, 'डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी प्रोबर्स' लिखा जिसमें मारवाडी, पंजाबी, भोजपुरी और मैथलि कहावतो का संकलन किया है। मेरठ क्षेत्रकी लोकोक्तियों पर लगभग २० वर्ष पूर्व राय राजेन्द्रसिंह वर्मा ने 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' में एक विस्तृत निबंध प्रकाशित कीया था। रतनलाल महेता ने 'मालवी कहावते' का प्रकाशन किया है। मेवाडी कहावतों का संकलन भी हो चुका है। डॉ कन्हैयालाल सहल प्रिन्सिपल बिडला आर्टस कालेज, पिलानी राजस्थान ने राजस्थानी कहावतो के सबंध में महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्य किया है। राजस्थानी कहावतो–एक अध्ययन के शीर्षक थीसिस पर पीएच.डी.की उपाधि प्रदान की है।

गुजरात के लोकसाहित्य में लोकोक्ति में दुहा, सोरठा, भडली वाक्यो, लौकिक व्युत्पत्ति, महेणा–टोणा रुढिप्रयोगो और कहावत का समावेश होता है। १९ मी सदी में पारसी लेखक जमशेदजी के 'कहेवत माला' ग्रंथ एक स्वतंत्र कहेवत कोश बहुत बडा कार्य है। 'कहेवत माला' इ.स.१९०३ में प्रकाशित हुवा था। जमशेदजी की 'कहेवत माला' ग्रंथ में भारत की संस्कृत, हिन्दी, मराठी, काश्मीरी, तमिल, तेलगु तथा विदेशी भाषाओं के अंग्रजी, फ्रेन्च, जर्मन ईटालियन, स्पेनिश, पोर्टुगील, डच, डेनिश, लेटिन, फारसी आदि भाषा की कहावतो का समावेश करने में आया है।

कहावते यानी **"परंपरा थी लोको मां कहेवाता बोधरुप, द्रष्टांतरुप वाक्यो के वचनो"**

हॉवेल कहते है कि **"आपणी लोकवाणी ने देववाणी कहीअे छीअे, त्यारे कहेवतो एक लोकवाणी वगर बीजु शुं छे? तो पहेल वहेली घडाइ अने पछी लोकोनी पसंदगीथी वातचीतमां फेलाणी तेथी तेना वजन अने वधारामां श्रेष्ठता होवी जोइअे।"**

अरबी की कहावत है कि **"जेम नीमक वगरुनु भोजन लुखुं तेम कहेवत वगरनी भाषा लुखी।"**

गुजराती लोकोक्तियो में शब्द का बदलता रुप

अनुभवीयों से अनुभव से सिध्ध हो चुके वचन है, यह वचनो को लम्बे समय से परिपक्व विचार अनुभवो के सार मात्र है और ये कदापि असत्य नहि होता है। ये देखने के लिए कहावत से समझेंगे

"बार कोषे बोली बदले, तरुवर बदले शाखा,

जाने दाडे केश बदले, लखण न बदले लाखा।"

"बार कोषे भाषा बदले," यह कितने दर्जेसे सही है वह देखेंगे। कठियावाड में गोहिलवाड, हालार, झालावाड और सोरठ ऐसे प्रांत आए है। हालार प्रांत मेंसे "ण" अक्षर को निकाल दिया है। "ण"के बदले लोक "र" शब्द का प्रयोग करते हे जैसेकी वारी, गोरी, कारु, पीरु आदि। जामनगर मे "श" बदले "स" का प्रयोग करते हे जैसे कि जईशुं को बदले जइसु 'आवीशुं'के बदले "आवीशुं गुजरात में कटडी कहाडवुं कहते है यह प्रांत में 'कढी',काठवुं आदि उपयोग होता हे।

झालावाड में क, ख, ग, घ, नीकाल दिया है। यह अक्षर के बदले कहीं पे च, छ, ज का उपयोग होता है। जैसे कि क्यां के बदले **'च्यां' छोकरी** की जगह **छोरी घी** के बदले **सी** गोहिलवाड में **च, छ** के बदले **स** बोलते है। जैसे की **चाह** के बदले **साह 'चोटली'** के बदले **'सोटली' यार** के बदले **'सार'**आदि। सोरठ में **'छुं'** के बदले **'छ'** का प्रयोग होता हे। जैसे की जाये **'जाये छ' 'आवे छ' मने** के बदले **हुं** को लिखा बोला जाता है।

सुरत मे "श" के बदले "स" बोलते है। जैसे की **"आवेय"**,"जायेय" "खायेय" भुतकाल में प्रत्यय **"या"** आदि यहां पर क्रियापद के अंत में नहि पर बीच में **"य"** का प्रयोग करते है। जैसेकि **"आथवा" "लाववा", "बोयला"**आदि बडौदा और चरोतर की तरफ भी बहुत सारे शब्दों का तफावत मीलता है। चरोतर में **"गाम"** बदले **"गोम"** **"इ"** के बदले **"ऐ"** जैसे की **"पीपळा"** के बदले **"पेपळो"** **"लीमडा"** के बदले **"लेमडो"** मतलब के "बार कोषे भाषा बदले" यह कहेवत सभी उदाहरण से यर्थाथ होता है।

"लखळ न बदले लाखा" यह पर सात्य है कि, जो आदत होती है वह बदलती नहि है।

गुजरात लोकोक्तियो का पुस्तक देखे तो इस १८८५ में "गुजराती कहावतो" इ.स १८८२ में "कच्छी कहावतो"मीलती है। इस १८८८ में नाथुशंकर उदयशंकर धोळकिया "कहावत माला" इ.स. १८८९ में डाह्याभाई दलपतराम के "गुजराती प्रोवर्ब्स वीथ धेर इग्लीश इक्विवेलेन्टस" उसमें गुजराती कहावतो का समान अंग्रेजी कहावत मीलती है। इ.स१८९२ में महासुख चुनीलाल शाह का अहमदावाद से पुस्तक प्रकाशित हुवा है । १८९३ में दाभुभाई डाह्याभाई महेता का "गुजराती कहावतो" फतेहचंद कारभारी १९०० में नरोत्तम देसाई के पास से मीलता हे। १९०१में मणीलाल दोलतराम पटेल का ध गुजराती इंग्लिश प्रोवर्ब्स की दुसरी आवृत्ति मीलती है। जो प्रथम आवृत्ति से माहिती मीलती है। १९०३ में जमशेदजी के कहेवत माला दो भागो में पहेली बार प्रकट हुई उसके बाद १०६ साल के बाद महाराष्ट्र राज्य, गुजराती साहित्य अकादमी की आर्थिक सहाय से और दीपक महेता की आध्येक्षता में सन् २००९ में पुनः प्रकाशित होती है।

गुजराती कहावतोः–

गुजराती कहावतों को देखेगें।

(१)	"अक्कल कोईना बापनी छे." अक्कल यानी बुध्धि होती है वह खुद की होती है। किसीकी उधारी पे या खरीदारी पे नहि ले सकते है।
(२)	"शेठनी शिखामण झांपा सुधी" कोइ जब अच्छी बात करता है या शिख देता है तो मनुष्य की मरजी होती है उनको कितना ग्रहण करना। मनुष्य जो बुरे कार्य करता है उनको आप कितना भी शिख दो उसकी कोई असर नहि।
(३)	बिलाडीने कह्यो छींकु तुटतु नथी। रांडिरांड ना शाप लागता नथी। बिल्ली के कहने से कोई झाल तूटता नहि है। चरित्र्यदिन स्त्री का कोई शाप यानी बुरे शब्दों का प्रहार करने से उसकी असर होती नहि है।
(४)	उलमांथी नीकळी चूलमां पड्यां एक मुसीबत से निकल कर दुसरी मुसीबत में पडना। एक खतम ना हो, तुरंत दुसरी शुरु हो जाती है।
(५)	खावाना सांसां त्यारे परोणाना वासा. जब खाने का खुदका ही नही होता तब उसी समय महेमान भी घर में आते है।
(६)	गरीबोनो बेली परमेश्वर गरीब जो होता हे उसका भगवान होता हे।
(७)	बोली ने अबोल्या नही करनार. एकबार वचन देते है तो उसको जीवन भर निभाना होता है।
(८)	रांड्यां पछी डहापण गलती हो जाने के बाद पछतावा करना, अपने आपको कोसना।

(९)	टाळे थाय ते नाळे–न थाय। समय पर ही होता हे। कोई भी कार्य होता हे वह समय पर ही होता है। पैसे खर्च करभी वह कार्य नहि होता है। समय ही बलवान है।
(१०)	भावतुं हतुं ने वैधे कह्युं. जो चीज या खाना पसंद था वह सामने से मीला। मनमें कोई विचार आया और वह कार्य करने का अवसर मीला।
(११)	दगो कोई नो सगो नहि। बे– वफाई किसी की नही होती है। आप किसी को उनका विश्वासघात करोंगे तो आप के साथ समय आने पर वही होता है।
(१२)	करणी तेवी पार उलरणी। हम जैसा कार्य कहेंगे वैसाही फल प्राप्त होता है।
(१३)	आडी रात तेनी शी वात? कल का भरोसा नही होता है। आप जो आज है वही पल जी लेना चाहिए।
(१४)	गोळे मरे तेने विषथी मारीअे नही । जो मीठां – मीठां बोलने से ही अपना कार्य हो जाता है तो उसे चालाकी या कु–नीती से कार्य नहि करना चाहिए।
(१५)	हैये होय ते होठे आवे। जिसका जीस तरह से सोचना या भावना होती है। वह समय आने पर दिख ही जाती है।
(१६)	सापने आँप नही।

	सच्चाइ को कभी भी छुपा नहि सकते है। सच पे कभी भी कोइ परेशानी आती नहि है।
(१७)	छोरु कछोरु थाय. मावतर कमावतर न थाय। बच्चा होता है वह बुरा कर सकता है, पर जो माँ होती है वह हंमेशा बच्चों का अच्छा ही सोचती है। जो बडे बडे संत होते है वह भी कोई कितना भी बुरा बोले, फिरभी वह कभी कीसीका बुरा नही करते।
(१८)	जेवी सोबत अेवी असर। हम जिसके साथ घुमते है। उसीकी आदत लग जाती है। वह मनुष्य बुरे कार्य करता है तो हमें भी उसके जैसा कार्य करने की आदत बन जाती है।
(१९)	जया ते जवाना। समय और इंनसान जो आता है वह चला जाता है।
(२०)	दाम करे कान लोंडी करे सलाम। रुतबा होता है वह कोई भी कार्य कर लेते है। पैसे से कोई भी अच्छा बुरा कार्य हो सकता है। यहाँ पर पैसा ही सबकुछ बताया है।
(२१)	पग तळे बळे ने जुअे नहि ते लंका ओलावा जाय। खुद के पास जो होता है वह दिखता नहि है। फिर भी दुर की बातें करता है।
(२२)	केड मां छोरुं ने गाममां ढंढेरो। खुद की चीज खुद के पास होती है फिरभी दिखाई नही देती है, वह पुरा घर सर पे रखता है।
(२३)	जाळपळां जग दोहलां, घन तो कालां घेर टोळा। जो बुध्धिमान होता है उसको सब मान देने है। पैसा सब के पास होता है पर बुध्धि तो भगवान जिसको देता है उसीके पास है।
(२४)	वीती होय ते जाणे, बे दरदी नी बला जाणे।

	जीसको दु:ख होता हे वही जानता है। जीसको नहि हुवा है वह तो केवल उसको बात ही जानता है। उसके दर्द को नहि जानता।
(२५)	नव नेजा पाळी चडे, पत्थर न भींजे कोर. कितना भी आप पाळी चढाया पर पत्थर पे कोइ असर नहि होती है। उसकी एक कोर भी भीगती नहि है।
(२६)	माग्या वगर मा पण न पिरसे। हमें जो चाहिए होता है वब बोलना पडता है। बिना बोले कोइ भी नहि देता है।
(२७)	चडती पडती चाली आवे छे अच्छा और बुरा समय जीवन के साथ आता रहेता है।
(२८)	बे–घोडे चडाय नहि। दोनो तरफ से कार्य नहि करना चाहिए अेक ही तरफ से बोलने का कार्य करना होता है।
(२९)	दीवा पाछळ अंधारुं कोई भी कार्य कुरिती से करते है तो वह देखने को अच्छा दिखता है पर उसके पीछे परिणाम बहुत बुरा होता है।
(३०)	पाळी वलोवे मांखण न नीकळे. पानी को कितना भी आप नीचोड दो वह मांखण नहि बनता उसी तरह कोई भी बुरा काम करने से अच्छा परिणाम नहि मीलता।
(३१)	कुंळुं झाड जेम वाळीअे तेम वळे. जब बच्चा छोटा होता है उसी समय उसको अच्छा बुरा दोनो का ज्ञान दे के सही दिशा में चलना शिखाना चाहिए। जब वह बडा हो जाता है तब वह नहि समज पाता।

(३२)	अंधा आगळ आस्सी, ने बेहरा आगळ गाता। जो अंधा होता है उसको कुछ दिखाई नहि देता चाहे वह इंसान गलत काम या किसी और जगह पर हो उसको दिखाई नहि देता है उसी तरह बहेरा होता है वह कितना भी बोल दो उसे सुनाई नहि देता है।
(३३)	उजड गाममां अेरंडो प्रधान। जहाँ कोई भी अच्छा कार्य नहि करता वहाँ पर थोडा कार्य करने वाला भी महान बन जाता है।
(३४)	आळस दरिद्रता नुं मूळ छे. आलस से कोइ कार्य समय पर नहि होता है। आलस हमें गरीबाई का मूल बना देती है।
(३५)	आँखे दिठानुं झेर. बहार से हर चीज अच्छी लगती है पर जब सच्चाई हम आँखो से देखते तब पता चलती है।
(३६)	संघर्यो साप काम मां आवे। संभालकर रखी हुंई हर चीज हमें मुसीबत के समय में काम में लगती है।
(३७)	रोग ने शत्रुं उगता छेदवा। शत्रु हो या रोग दोनो को बढना नहि देना चाहिए योग्य समय पर उसका नीकाल कर देना चाहिए।
(३८)	भसता कुतरा करडे नहि। जो बहुत बोल–बोल कर रहा होता है वह अपना कोई भी कार्य योग्य समय पर पूर्ण नहि कर पाता है।
(३९)	जेने नहि लाज तेने अर्धुराज

	जीनको शरम नहि होती है उनको कोई भी मर्यादा नही रोकती। हर जगह पर वह अपनी मनमानी करते है।
(४०)	नादान नी दोस्ती जीव नुं जोखम दोस्ती होशियार के साथ कि जाती है। नादान बुध्धि वाला खुद मरता है और हमें भी मुसीबत में डालता है।
(४१)	माथुं आपे ते मित्र हमारे बुरे समय में जो ढाल बनकर हमारी रक्षा करे वही सच्चा मित्र होता हे।
(४२)	भाव खाद्या वगह कह्युं करे. अच्छे इंन्सान को मान की लालसा नहि होती है वह हर कार्य बिना कहे कर देता है।
(४३)	बेनी लडाई मां त्रीजां ने लाभ दो इंन्सान आपस में लड रहे है उसी समय कोई तीसरा बीच में छुडाने के लिए आए तो वह बाजी मार जाता है। दो भाई के झगडे में पडोशी का ही फायदा होता है।
(४४)	धीरज ना फळ मीठां छे. हमेंशा धीरज रखनी चाहिए उसका फल मीठा होता है। समय से धीरज के साथ कार्य करने से कार्य अच्छे से पुरा होता है।
(४५)	चोरनी गत चोर जाणे जीसकी जैसी सोच होती है, उसको वही पहचान जाता है। जैसे चोर चोर को।
(४६)	जेने ऋण नहीं ते राजा। जीसको उधारी नहि होती है वह राजा की तरह अच्छी नींद से सो जाता है।
(४७)	बाप तेवा बेटा नें वड तेवा टेटा। बाप जैसा होता है उसका बेटा भी उसी नियत का होता है जिस तरह से बरगद के पैड में उसी तरह उसका फल बैठता है।

(४८)	पुत्रना लक्षण पारणामांथी जणाय बेटा जो होता है वह छोटा होता है तब ही उसकी नीती का पता चल जाता है।
(४९)	उपकार ने बदले अपकार कोई हमारा अच्छा काम करता है तो हम समय के साथ उसे किसी भी बात का बैर लेने के लिए उसका बुरा कार्य करते है।
(५०)	चेतता नर सदा सुखी जो मनुष्य परिस्थिति का पहले से ही परख जाता है तो वह उस परिस्थिति का आसानी से सामना कर सकता है।
(५१)	दुधना दुधमां पाणीना पाणीमां जो अच्छा कार्य होता है उसका फल अच्छा ही मीलता है जो मीलावट से कार्य करता है उसका फल कोई मीलावट के रुप में मीलता है।
(५२)	डुबतो माणस तरणा झाले। मुसीबत में इंसान छोटी सी भी सहाय का भी उपयोग कर लेता है। उसी समय उसको थोडा सहारा दे के बाहर नीकाले तो वह नीकल सकता है।
(५३)	सोना करता घडामण मोघुं। किसी भी चीज का वपराश से ज्यादा उसको रखने का खर्च होता है।
(५४)	मोरना इंडाने चीतरवा न पडे। बच्चे वैसे ही होते है जैसे उनके माँ बाप होते है। वही से यह नीती नियम बोल चाल सब कुछ सीख कर आते है।
(५५)	आंधळा बेहेरु कुटाय। अधुरी बात सें सबको माहिती अधुरी मीलती है। बोला कुछ और होता है और सुना कुछ और होता है।

(५६)	पोतानुं राख ने पारकुं ताळे । अपनी वस्तु का बचाव करते है दुसरो की चीजों पे वह नजर रखकर उसका कब उपयोग करे वह चाह रखते है।
(५७)	दीठे रस्ते जवुं ने दीठे रस्ते आववुं। जो रास्ता मालुम होता है उसी रास्ते से जाके आना चाहिए। कभी–कभी दुसरे रास्ते जाने से मुसीबत भी आ सकती है।
(५८)	जे जेनो परोणो ते तेनो परमेश्वर. जिसके घर महेमान आते है उसे परमेश्वर की तरह उसकी सेवा करनी चाहिए। अच्छे पकवान, अच्छे मान–सन्मान देकर उसे स्वागत करना चाहिए।
(५९)	माफ कर्यामां मजा। माफि देने से मनका भार हलका हो जाते है किसी के साथ वैर का भाव नहि रहेता है।
(६०)	जे करे ते भोगवे. जो जैसा कार्य करता है उसी वैसा ही फल मीलता है। अच्छा हो तो अच्छा वरना बुरा कार्य किया हो तो उसे बुरा फल प्राप्त होता है।

इसी तरह यहाँ पर कुछ कहावतो को दिखाया है। यह मनुष्य के जीवन के साथ चलती रहेती है। गुजराती लोकक्तिया के साथ दुहा का भी अलग ही प्रभाव होता है।

(दुहा)

गुजराती लोकसाहित्य में दोहा के बीना साहित्य को पुरा नहीं कहा जा सकता है। दुहा हमें छंद के साथ प्रास के साथ समाज और मनुष्य को अपने कार्य के साथ जोडकर रखता हे।

(१)	ब्राह्मण जण थी ओसरे, क्षत्री रणथी जाय; वैश्य डरे वेपारथी, अे (त्रण) कायर

	कहेवाय ब्राह्मण जो होता वह अगर पाणी से शरीर को घीस घीसकर स्नान करे, क्षत्रिय जो होता है वह लडाई से भाग जाता है, और वैश्य यानी वेपारी जो वेपार करने से डरे तो यह तीनो कायर कहलाते है।
(२)	वहालुं पळ पछी नवगमे, हद पार जो जाय; वाळ मूछ नो पळ जो वधे, कातरथी कतराय। यह दोहों में अतिशय प्रेमकी बात कही है। अगर अतिशय प्रेम करते है पर वह हद से बाहर जाता है तो हम उसे पसंद नही करते है। जैसे मूछ का बाल हो तो वह जब हद से ज्यादा बडा हो जाये तो उसे काटने में परेशानी होती है।
(३)	हंस श्वेत बग श्वेत छे, पण बेमां छे फेर; हंस भअ मोती कइ, बग मीन मेंडक वेर. यह दोहे में मनुष्य की नीती की बात बताइ है जैसेकी दोनो एक जैसे लगते है फीर भी दोनो का कार्य अलग है। अेक मोती को खाता है तो दुसरा मेंढक को।
(४)	चंदा वेरी वादळां, जळवेरी शेवाण; पुरुष वेरी उंघ छे, माछली वेरी जाळ। यहाँ पर हर कोई किसीका विरोधी होता है। जैसे चाँद को अगर बादल होते है। चाँद की चाँदनी का दर्शन नही कर सकते वैसे ही अगर हम कोई अच्छा काम करे पर थोडा कार्य बुरा करे तो अच्छे काम के दर्शन नही होते। वैसे ही पाणी का वेरी लाल होती है वह साथ होकर भी उसकी विरोधी है। पुरुष अगर महेनत नही करता और जरुरत से ज्यादा नींद लेता है तो वह भी विरोधी है। मछली का वेरी जाल होता है। यहाँ पर अतिशय किसी का उपयोग हो तो हमें ही नुकशान करता है।
(५)	पाप करता वारीअे, धर्म करतां हां; बे मारग बतलावीअे, पछी गमे त्यांजा। यहाँ पर नीती की बात कही है। अगर कोइ गलत कार्य करता है तो उसको धर्म का ज्ञान देकर रोकना चाहिए। उसको सत्य असत्य दोनों की बात करनी चाहिए, फिर

	चाहें वह उसको जीस मारग पर जाना है वह उसका निर्णय है,परंतु हमें ज्ञात करना चाहिए।
(६)	वींछी केरी वेदना, जेने वीती होय; ते जाणे पीड पारकी, अवर न जाणे कोय। यहाँ पर वेदना की परख बताइ है। अगर हम किसी का दर्द तबही समज सकते है जब हम पर वह बीती है। वरना हमें वह केवल बात ही लगती है।
(७)	भलो भलाई ना तजे, दुष्ट न चुणे दाव; चंदनने सळगावता, प्रगटे शुभ स्वभाव। यहाँ पर मनुष्य की अच्छा स्वभाव की बात की है जैसे की भला इंसान कुछ भी हो जाये अपना अच्छाई का स्वभाव नही छोडता है वैसे ही दुष्ट इंसान बुराई का स्वभाव नहीं छोडता है। वैसे ही चंदन के पैड को अगर जला दे भी तो उसमें से सुंगध ही आती है।
(८)	भूख न जाणे भावतुं (ने) प्रीत गळे नहि जात; उंघ न जाणे साथरो, ज्यां सूना त्यां रात। यहाँ पर जरुरियात की बात की है जीस समय पर मनुष्य को भूख लगती है वह कुछभी खा लेता है। वैसे ही जीसे प्रीत होती है वह नात–जात नही देखता। वैसेही नींद आती है वह जगह नही देखता ना ही दिन रात वह नींद को प्रधान मानकर सो जाता है।
(९)	तुलसी वहाँ न जईअे, ज्यां न कहे के आव; घास बराबर जाणीअे, क्या राजा क्या राव। यहाँ पर अपनी किंमत की बात की है अगर कोई हमें आवकार न देते उसके घर कितना भी पैसा हो वह घर हमारे लिए गरीब के बराबर है। यहाँपर मान की बात है।
(१०)	उंचुं पद आश्रय विना, कोई नथी पामेल; करीऐ उंची नव चडे, वन आधारे वेल। महेनत करने से ही कबकुछ मीलता है, महेनत के बिना उचाँ पद नही मीलता पुरषार्थ

	के बिना कोई कार्य सफल नही बनता, जैसे वेल को चढने के लिए दोरी का आधार चाहिए बिना आधार की वह नही चढ शकती।
(११)	मात, तात ने मित्र अे,मूळथी त्रण हितकार; हितकार बीजां बधा, गरज पडे ते वार। माँ–बाप, मित्र यह तीनो सही अर्थ में हमारा भलाई कि सोचते है। वही अच्छा सोचते है। बाकि जो लोग है वह जब हमारा काम होता है तब–तक ही हमारा अच्छा सोचते है।
(१२)	दोस्त वखाणीअे दातणे सगो वखाणीअे सोहे; स्त्री वखाणीअे क्यारे, घरमां न होय कोई। यहाँ पर दोस्ती की बात कि है, दोस्त ऐसा होना चाहिए की हमें हाल में साथ दे और हमारे घर की इज्जत को भी सँभाले वैसा होना चाहिए।
(१३)	कोक वात करे त्यांह वचमां पोते बोले; लालो कहे छे मालाने, ते तरखलाने तोले। यहां पर हमें चेतवनी देते कि कोई बात करता हो तो अपनी राय रखने की जरुरत नहि है बिना पूछे अपना मंतव्य अपने पास रखना चाहिए।
(१४)	सत्य, शील, संतोष, तप, दया, बिन तृष्णा, दान; क्षमा,अहिंसा, शौय, यम, लक्षण धर्म बखान। यहाँ पर धर्मकी बात कि है धर्म में सत्य, शील, संतोष, तप, दयाभाव, मान के बीना दान देना, क्षमा करना, अहिंसा, ताकातवर है, डरपोक नही आदि लक्षण जिनमें होते है वह धर्म का पालन करते है।
(१५)	क्यां चाँद चकोर क्यो क्यां मोर क्यां मेह; अणगा तोअे ढुंकडा सांचो ज्योहि स्नेह। जिसे सच में प्रेम करते हे वह दुरी की महता नहि रहेती है। कितने भी दुर होकर भी वह हमेंशा पास ही होता है।
(१६)	दशा तारी पळ ते थशे जो विषम भोगमां भाषा; जो चित्त चिन्ते ब्रह्मने ,चिंता सुहृदय

	समान। यहां पर चिंता अगर करते है तो उसका कोइ मतलब नही है। चिंता से हमें ही नुकसान होता है। चिंता में मनको भगवान के अंदर जोड देना चाहिए।
(१७)	ऐक शुक्र नी बुंद थी प्रगड्यां, पशु पक्षी नरनार; अंग अंगना रंग जुजवा, श्रीवर सरजनहार। यहाँ पर भगवान के महिमा कि बात की है। भगवान ही इस पृथ्वी के सर्व जीव के सर्जनहार है। उनके बीना यह पृथ्वी चल ही नही शकती।
(१८)	जात नहि जगदीश कुं, तो हरी जनकुं क्या होय; जात भात कुल कीचमें, डूब मरो मत कोय। यहाँ पर भगवान सब को एक ही मानता है। वह किस कुल का है, वह कहां का है, वह भगवान का नही जानते है। जात–नात में वह मानते ही नहि है।
(१९)	परनारी ताती छरी, नित नित कापे काप; जेना रुंठ्या रामजी, ते परनारी घर जाय। यहाँ पर दुसरी नारी पे मोह नही रखने को कहाँ है। परनारी माता तुल्य मानी गई है। यहाँ पर जो भगवान को नहीं मानते वह परनारी को भोग करते है।

गुजराती में दोंहो का बहुत सारा संग्रह है। इसमें सें हमें नीती, न्याय समाज की प्रतिष्ठा आदि का उत्तम दोहा मील जाता है।

रुढिप्रयोग

(१)	अक्कल गीरो मूकवीः–दुसरे की बुध्धि से चलना।
(२)	अजमो आपवो :– लांच देना
(३)	अढार वांका होवाः– दुर्गुणो से भरपूर
(४)	आकाश टुटी पडवुं :– अचानक से मुसीबत आना

(५)	आठे पहोर ने बत्रीसे घडी:–निरंतर
(६)	आदुं खाईने पडवुं:–महेनत से लगे रहेना।
(७)	उनाळो दहाडो जोवा:–सु:ख आनंद का समय
(८)	उंची मूछ राखी :–गर्व करना
(९)	अेक भवमां बे भव थवा:– जात बदलीना,धर्मभ्रष्ट करना।
(१०)	ओसनुं मोती :–नाशवंत
(११)	कजियानुं मों काळुं करवुं:– लडाइ से बुरा परिणाम आना
(१२)	कठीनो स्वाद चाखो:– अनुभव लेना
(१३)	काचे घडे पाळी भरवुं:–बिना मतलब की बाते करना
(१४)	काननी बूट पकडवी:– शिक्षा का बोध लेना
(१५)	कांडा कापी लेवा:– कबूल कर देना
(१६)	कूतरां बिलाडा जेवुं:– साथ होकर भी मेल ना हो
(१७)	खातर पाडवुं:– चोरी करना
(१८)	खीलाने जोरे कूदवुं:–कोइ सत्तावर इंसान की पहचान से बडाई करना।
(१९)	खो भूली जवो:– पाठ शिखना।
(२०)	गजवामां घालवुं:– मान न देना।
(२१)	गधेडी झालवी –पकडवी:– गुना करना
(२२)	गाबची मारवी:– बहाना नीकालना
(२३)	गायने दोहीने कूतराने पावुं :– आपत पे उदारता रखना।
(२४)	गोटली मानवी:– कामचोरी करना
(२५)	ग्रह वांका होवा:– नसीब खराब होना
(२६)	घडो फूटवो:– छूपी बात बाहर आना

(२७)	घाट आक्योः– योग्य आकर आना
(२८)	घाचीनी घाळी जेवुंः– ज्यादा ही गंदा
(२९)	घुंटडो उतारवोः– बात मानलेना
(३०)	घोडे चडवुं– बेसवुंः– आगे आना, उत्तेजित होना
(३१)	चटको चडवो –लाववोः–बुरा लगना, मन दुःख होना
(३२)	चणा चवरावावाः– ठग ना, बेवकुफ बनाना
(३३)	चरबी चढवी – वधवीः– अभिमान होना, उन्माद होना
(३४)	चिठ्ठीना चाकर बनवुंः– आज्ञा के अनुसार चलना
(३५)	चीतरी मूकवुंः–बगाड करनाः– नुकसान
(३६)	छप्पन देशनां पाणी पीवाः– अलग अलग अनुभव करना
(३७)	छरी मूकवीः– पायमाल करना, कतल करनां
(३८)	छेडो पाथरवो :– आजीजी करना, नम्रभाव से मांगना
(३९)	जख मारीने :– निराश होना
(४०)	जडभरत जेवुंः– एक जगह पर अडग रहेना , मूठ जैसा
(४१)	जमानो देखोः– ज्यादा अनुभव होना
(४२)	जाळमां फसावुंः– कपट करना, बेवकूफ
(४३)	जिगर नो टुकडो होवोः– खुब प्रिय होना
(४४)	जिभ ने टेखे होवुंः–सहिरुप से याद होना
(४५)	जोग घसवाः–वाहवाई करना, गरज से उसके घर जाना
(४६)	झाडनां वांदरा उतारवाः– सीधा ना बैठा हो
(४७)	टाढुं पड्युंः– शांत होना, नरम होना
(४८)	टाळो देवोः– वादा करना, सांत्वना देना

(४९)	टोपी फेरवीः– देवादार करना
(५०)	ठोकर खावीः– नुकशान होना, गीरजाना
(५१)	डहापण डहोळयुंः–बिना सोचे बोलना
(५२)	डाबा हाथनो खेल होवोः– सरल से काम करना
(५३)	ढांकणी मां पाणी घाली डूबी मरवुंः–इज्जत को खोने से मुह नहि दिखाना
(५४)	ढोलकी बे बाजु वगाडवीः– दो तरफ बोलना, दोनो पक्ष का हाथ रखना
(५५)	तळखलाने तोले गणवुंः– किसि की भी बात न मानना
(५६)	ताकडो साधवोः– योग्य समय पे काम आना
(५७)	तेल नीकळवुंः– अतिशय काम करके थक जाना
(५८)	थू थू करवुंः– तिरस्कार करना, धृणा करना
(५९)	थाप खावी – लागवीः– ठगना, छेतरना, नुकशान
(६०)	दरिया जेवडुं पेट राखुंः– उदारता रखना
(६१)	दही दुधमां पग राखवोः– दोनो पक्ष को साथ देना
(६२)	दाढमांथी बोलवुंः– महेणा लगाना, बुरा बोलना
(६३)	दोकडो नीकळी जवोः– मान न मिलना
(३४)	धजागरो बांधवोः– लोकमां जाहेर करना, फजेती करना
(६५)	धाड पाडवीः– कान से कम सुनना
(६६)	धरती नो छेडो आववोः– हद आना
(६७)	धूळ उडाडवीः– हसी उडाना, बे–मतलब का बोलना
(६८)	नजर करवीः– महेरबानी करना
(६९)	नरमघेंश जेवुं थई जवुंः–गुस्सा शांत करना
(७०)	नेम मूकवीः–निसान चुकना, काम न होना

(७१)	नेवे मुकवुंः– छोड देना, दुर करना, उपेक्षा करना
(७२)	पग कपाई जवोः– आना–जाना बंध होना
(७३)	पेटमां तेल रेडावुंः–अदेखाई करना, गलत करना
(७४)	पैसा पाणी मां नाखवाः– बिना फायदे का काम करना
(७५)	फटको खावोः– नुकशान होना, हार होना
(७६)	फुलेकुं चढवुंः– बेआबरुं होना, वरघोडो चढना
(७७)	फोली खावुः–निंदा करना, किसीका पैसा गलत तरीके से खर्च करना
(७८)	बचको पाछो आववोः– दिकरी विधवा होकर आना
(७९)	बपोरा गाळवा :– खा–पी के आराम करना
(८०)	बे–दाणा अक्कल न होवीः– बुध्धि न होना
(८१)	भभूकी उठवुंः– गुस्से से बोलना, आग लगना
(८२)	भूपाववुंः–पाई देवुं, नरम होना, हसना
(८३)	भेजुं फाटी जवुंः–पागल होना, अविवेकी होना
(८४)	मगज मां आववुंः–विचार होना, ध्यान में आना
(८५)	माथुं उंचु राखवुं :– खूद का मान रखना
(८६)	यारी आपवी देवीः– नसीब काम करना, मदद करना, साथ देना
(८७)	रग चडवीः– गुस्से होना
(८८)	रात कहे तो रात अने दाहडो कहे तो दहाडोः– किसी की इच्छा के अनुसार चलना
(८९)	लबाचा बींखवाः– इज्जत कम करना
(९०)	लंका बाळवीः– बुरा करना, गुप्त बात बताना
(९१)	वखारे ताळा देववांः– किसी के बिना काम अटकना
(९२)	शनिनी दशा बेसवीः– दुःख पर दुःख होना

(९३)	सफाई मारवी :– बिना बात का गर्व करना
(९४)	हाडकां चोरवाः–आलस करना
(९५)	हैया उरप राखवुंः–प्रेमसे रखना
(९६)	सोना साठ करवाः–खोट खाना, आबरुं खोना
(९७)	शेकी नाखवुंः– छुपाना
(९८)	श्वास ऊडी जवोः– मरजाना, डर लगना
(९९)	हडे हडे करवुंः– इज्जत न देना
(१००)	होठ खाटा करी नाखवाः– खुब मारना

पहेलियाँ

पहेले के समय में जब दादा दादी बच्चों के साथ अटपटे सवाल करे उसे कुछ प्रश्न पूछते रहते थे जिसे उनको ज्ञान प्राप्त हो। उसके लिये बच्चे को अपनी बुध्धि का प्रयोग करना पडता था। पहेलियाँ यानी प्रश्न को पूछने पर उसके आधार पर ज्ञान भी मिल जाता है और मस्ती भी हो जाती है। उसके तार्किक कसोटी का आधार मीलता है। नई वस्तु शिखने का प्रयास होता है। पहेलियाँ प्रश्नावली ही होती है। परंतु कविता की तरह वाक्य को एक दुसरे से जोडके बनाई जाती है। उसे पहेलियाँ कहते हैं।

पहेलियाँ

(१)	नानी–नानी ओरडी मां बत्रीस बावाः– दांत
(२)	ना जीव ना खाय, ना पीअे, रहे, मुल, त्या लगी जीवे, अंधाराथी अे बहु डरे, जोताज छुपे, निज धरे :– परछाई
(३)	ऊंचुं छे ऐक प्राणी, अेनी पीठ छे त्रिकोणी छे रणनुं जहाज गाडी, अेने जोईअे

	थोडुंक पाणी:–ऊंट
(४)	चार बाजु भींत अने वच्चे पाणी:– नारीयेल
(५)	राजा करे राज ने दरजी सीवे कोट :–राजकोट
(६)	अेवी कइ शाकभाजी छे जेमां ताळुं अने चावी बंने आवे छे?:– लौकी
(७)	राता–राता रातनजी पेटमां राखे पळां वळी गामे–गामे थाय, अेने खाय रंकने राजा? :–बोर
(८)	वाचा नही पण बोली शके, पग नथी पण चाली शके, वागे छे पण कांटा नहि अेना इशारे दुनिया चाले?:– घडी
(९)	घरमां महेमानोने देवाय, वोटमां नेताओने देवाय, आराम करवामां वपराय :–खुरशी
(१०)	लीली माछलीना ईंडा लीला पण, माछली करता इंडानुं मूल्य वधारे। :–वटाळा

गुजरात के लोकमेलाओं– व्रतोत्सवों देवी –देवता और लोकधर्मो।

लोक–मेला का स्वरुप और विशिष्टता

लोकमेला गुजरात के समग्र लोकसमुदाय के लिए एक विशेष महत्व रखता है। लोकसमुदाय से सीधा, सरल और परिश्रम से भरे हुए जीवन में आनंद और उत्साह को बढाने का अवसर ही यह लोकमेला है। यह मेला में मनोरंजन तो होता ही है, उसके अलावा घर से बहार का मुक्त वातवरण का अनुभव करना, साथ–साथ घुमने का अवसर भी मिलता है। परिचितोसे मिलना नये सबंधो बनाने का मोंका यह मेले में मीलता है। गुजरात में लोकमेलाओं ज्यादात्तर धार्मिक तहेवार, प्रसंगो, मान्यताओं के अनुसंधान में होते है। भगवान राम, कृष्ण, हनुमानजी तथा अंबाजी, बहुचराजी, शीतला माता, खोडीयार माता जैसी देवी देवताओ के पर्व–प्रसंग में आयोजन मेलामें लोकसमुदाय धार्मिक भावनासे भाग लेते है। ऐसे ही सहजानंद स्वामी, कबीरजी, ओधडदादा, भाथी–खत्री, जलारामबापा जैसे संतो तथा

मुस्लीम पीर ओलिया मीर दातार, हझरतपीर, नरुदीन ओलिया आदि की स्मृति में और रामदेवपीर, जखदेव आदि स्थानिक देवताओ की याद में जो संप्रदाय – समुदाय के लोक विशेष, उत्साह से जुडते है। यह धार्मिक महत्व के मेलेमें वास्तव में बिनसांप्रदायिक मूल्य रखते है और लोकसमुदाय में प्रेम, निखालस और सेवा की पवित्र भावनाओं को जगाने एवं जतन करन में महत्व का भाग होता है। धार्मिक प्रसंग के अलावा अन्य मेलाओं भी निर्दोष मनोरंजन या फिर लोको को ऐकठ्ठा करने में और मानव – मानव बीच का भेद भाव को भूलाने के लिए एक बहुत बडा योग्यदान देता है।

ज्यादात्तर मेला वर्ष में एक ही बार होते है। फिर भी कही पे खास करके आदिवासी विस्तार में मेलाओं जो 'हाटमेळा ओ' से पहेचाने जाते है। वह हर हप्ते में आयोजन किया जाता है। स्थानिक मेला एक दिन का हि होता है फिर भी तरणेतर, भवनाथ और माघवराय का मेला जैसे कितने मेले पांच–सांत से ज्यादा दिन तक चलते है।

यह मेले में मनोरंजन के साघन सहजरुप से नहि मीलता था, बाह्य व्यवहारो के साधन भी नहि थे तब लोको के जीवन जरुरियात चीजों को लंबे समय तक रखने के लिए कोई साधन नहि थे। तभी वार–तहेवारे योजाता यह लोकमेलाओं हमे मनोरंजन उपरांत हटाळुं करने का जगह, साधन के रुप में ज्यादा उपयोगी थे। लोकमेला का यह महत्व पुराने समय में जीतना था आज भी उतना ही रहा है। आज वाहन–व्यवहार के साधनो की व्यवस्था ज्यादा हो गई है फिर भी ग्राम्य प्रदेश में लोकसमुदाय के लिए मेलाओं ही उसका सही रुप से आकर्षक रखा है।

'वैठा'के मेले में गधे का बाजार लगता है। धरणीधर ढोमा ओर जणिया में बेल, बछुवा और उच जात के घोडे का बाजार लगता है। वहाँ जाके यह पशु की पसंद करना खरिदने तक यह लोकमेले में मीलती है। माधवपुर में घोडा दोड और ऊंट–दौड का अद्‌भुत आयोजन होता है।

आदिवासी के लोक मेलें मे उनके जीवन साथी की पसंदगी का मेला भी होता है। खुद की पसंदगी कन्या से आदिवासी युवान पहले आयोजन के अनुसार यह मेले में से अपहरण करके ले जाता है। उसमे कभी स्नेहीजन के साथ लडाई भी हो जाती है। कन्या के यह अपहरण में आदिवासयों 'लाडी–खेंचवी' नाम देते है।

लोक मेंले में आकर्षक के तत्वों होते है। मीठाई, खाने की चीज, कपडे और उनेक उपयोगी

चीजे, वासण और धातुकी बनावटे झवेरात, रस्ता पर आकर्षक गहने, खीलोना और आदि अनेक लोकसमुदाय की आकर्षक चीज वस्तुअे छोटी हाट्टीओं, रंगबेरंगी पोशाकों और झगमगाते आभूषणो से सज्ज युवती ओर युवको रास, गरबा, भजन, दुहा के कार्यक्रमों यह सब लोकमेलें का आकर्षण बनते है। गुजरात के लोकमेले की यह अलग ही विशिष्टता है।

गुजरात गेझेटियर में बताया की गुजरात में यह मेलो की संख्या १५०० से ज्यादा है। उसमें धार्मिक मेला विशेष है। विगत से देखा जाये तो यह मेले में भगवान शंकर के उत्सव पे ३५० मेंलों की संख्या है। कृष्ण जन्म उत्सव में ३०० मेले, माताजी में १९० मेले, मुस्लिमपीरों के १७५, होली धूळेटी के ८५, हनुमानजी के ५१, और लगभग उतना ही शीतला माता के प्रसंग पे आयोजित होते है। ज्यादात्तर मेला नदी, तालाब या दरिया किनारे और पहाडि की तलेटी में आयोजित होते है। गुजरात प्रदेश में गरमी के एक दो मास को अपवाद करके पूरे साल यह छोटे बडे मेलों का आयोजन होता है।

तरणेतरनो मेळो (भादरवा सुद ३.४.५)

सुरेन्द्रनगर तहसिल में तरणेतर नामका गाँव में त्रिनेत्रेश्वर महादेव का मंदिर है। यह मंदिर के प्रांगण में मेला लगता है। यह मेला गुजरात में ही नहिं पर पूरे भारत में प्रसिद्ध है। यह मेला भादरवा सुदः ३.४.५ तीन दिन तक होता है। इस समय भारत में प्रवास करनेवाले विदेशी भी यह मेला देखने आते है।

यह मेले की रंगत ही अद्‌भूत होती है। सुंदर भातीगळ के कपडे और सरपे लाल रंगके साफा बांध के युवान और आभला (काच के टुकडों से बना एक झेवर) से भरे रंगबेरंगी घेरदार घाघरा और दुपट्टा के साथ घुम रही सोरढी युवतीया यह मेले में रंग बना देती है। पूरी रात पावा ऐक वाद्य के सूर, ढोल के ताल, दांडिया के रास से वातवरण सुगंधित बन जाता है। मेले में सुंदर भरत से बनाई हुवा छाता उनकी विषेशता है। पूरी रात भजन मंडली से किर्तन बजते है। यहाँ पर लोग अपनी रोजिंदा जींदगी को भूलकर यहाँ पर मस्त बन जाते है। एक दंतकथा के अनुसार पांडवापुत्र अर्जुन ने जब द्रोपदी से जहा वरमाला पहेनाकर मस्य वेध और स्वयंवर इसी स्थल पर हुवा था।

तरणेतर के मेले में कणबी काठी, कोळी, भरवाड और रबारी प्रजा के उपरांत देश और विदेश से भी जिज्ञासुओं आते है। तरणेतर शब्द गुजरात में मेले का पर्याय हो वैसा लगता है। मेले का आकर्षक और रोमांचक जो अंग है रासडा, ढोल और दो पावा का सूर और ताल में गोल वर्तुळ में घुमती मोहक नाचती काठी, कोळी, रबारी, भरवाड और अन्य लोकसमुदाय की सेंकडो स्त्रीयाँ आर्कषक लोक–नृत्य करती है। उनके पारंपारिक वस्त्र और चांदी के आभूषणो तरणेतर मेले का गुजराती सांस्कृतिक का यह नमूना रुप नजराणा दिखता है। गुजरात के प्रवासी विभाग से देश विदेश के मूलाकातियों के लिए रहेने के लिए कूबाओ और तंबूओं का आयोजन होता है। पंचायत के तरफ से कुटीर उद्योग की आकर्षक वस्तु का प्रदर्शन होता है। रास–गरबा और रमत गम्मत की स्पर्धा होती है। तीन दिन डायरा का आयोजन होता है, जिसमें सोरठा, दुहा, रास और गरबा का रमझट होती है। तरणेतर का लोकमेला गुजरात के लोकसमुदाय के लिए एक अनोखा और अनमोल अवसर बन जाता है।

वैठा का मेला।

गुजरात के मेलों में वैठा का मेला एक महत्व मेला है। यह मेला का स्थल की आगवी विषेसता है। उनका स्थल सप्त संगम–सात नदीयो–का संगम के पवित्र तीर्थ माना

जाता है। सात नदियों में साबरमती, हाथमती, वात्रक, खारी, मेन्वो, मासम और शेढी नदीयों का संगम होता है।

वैठा अहमदावाद जिल्ले के धोलका तहसिल और खेडा तहसिल के मातर तहसिल की सरहद पर है। अहमदावाद जितने में हो रहे मेलों में वैठा का मेला ही सबसे बडा मेला है। वैठा की आसपास भाल– नळकांठा और चरोतर विस्तार में से या गुजरात के अन्य विस्तारो में से लाखों लोक यह मेला देखने आते है। यह मेला कार्तिक पूनम में होता है, फिरभी अगले पंद्रह दिन से लोक यहाँ पर आने लगते है और पूनम के बाद के पंद्रह दिन तक यानी एक महिने तक यहाँ पर लोक आते–जाते है।

कार्तिक पुर्णिमा में सप्तसंग में स्नान करने का महत्व है और उस दिन स्नान करके लोक धन्यता का अनुभव करते है। वैठा के यह मेले में भी अनेक हाटडीओ, बडी दुकान, मनोरंजन के साधनो मदारी, जादुगरों नट, भवैया एवं सरकस, चगडोळ आदि मनोरंजन के साधन होते है। रात को भजन मंडळी तथा तालुका पंचायत घोलका द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन होता है। यह मेले का खास महत्व है कि यहा पर गधे तथा ऊंट की बडी बाजार लगता है। गधें एवं ऊंट खीरद और बेचने के लिए राज्य एवं राज्य के बाहर से वेपारी आते है। गधे और ऊंट को सजाधजा दिया जाता है। इसलिए यह बाजार बहुत ही आकर्षक लगता है। इसके अलावा यहाँ पर पशुओं का भी वेचाण भी आकर्षक का केन्द्र बन जाता है। यह देखना भी एक बडा पल होता है जीसमें रु ७००० तक की किंमत के गधे को बेचने के लिए आते है।

शामळाजी का मेला

कार्तिक पूनम के दिन यह मेला लगता होता है। साबरकांठा जिल्ले के मोवा नदी के किनारे आऐ हुए पुरातन तीर्थ शामळाजी में कार्तिकी पूनम के दिन एक बडा मेला होता है। यह मेले की शरुआत देवउठी अगियारस से हो जाती है। मात्र सांबरकांठा मे से नहि, परंतु राज्य के अन्य स्थलों से तथा राज्य के बाहर के राजस्थान तथा मध्यप्रदेश में से भी लोक यह मेले को मानने के लिए आते है। दो लाख से ज्यादा लोक यह मेले मे होते है। यह मेले में मंत्र–तंत्र की

साधना करनेवाले बाबा, भूवाओ बडी संख्यामें उपस्थित होते है। भूत–प्रेत को निकालने का ईलाज के लिए भी आते हे।

यह मेले में आदिवासी बहुत बडी संख्या में होते है। यह लोग शामळाजी (फाळिया–बापजी) में अनंत श्रध्धा रखते है। गरासिया कोम–के लोग विशेष देखने को मिलते है। यह मेला अरवल्ली के पहाडो के बीच रंगभर्यो उत्सव बना जाता है।

भवनाथ को मेला शिवरात्री का मेला (महा वद:१३)

जूनागढ में गिरनार की तलेटी में भवनाथ का मंदिर है। भवनाथ का मंदिर महदेव का है, जो शिवरात्री के दिन भक्तो एवं भाविको से उभर जाता है।

भवनाथ का मंदिर पुराना है। उनका शिवलिंग स्वयंभू है। महाशिवरात्री की मध्यरात्री में भगवान भवनाथ की महापूजा होगी है। चार दिवस के लिए यहाँ मेला लगता है और लगभग चारसो से ज्यादा की दुकानें होती है, जहाँ पर अवनवी चीजो को बेचते है।

शिवरात्री की महापूजा के दर्शन करने के लिए और मेले में भाग लेने के लिए आसपास के विस्तार से नागाबावा (नंगे बाबा) की टोली यह स्थल पर आती है। नाचते–गाते, शंख–ध्वनि करते जात जात के वाद्यो के बजाते महादेव को जयनाद करते यह बावाओ की टोली भभूतनाथ भवनाथ की अनोखी आस्था होती है।

यहाँ पर नंगे बाबा ही नहि पर अन्य संतो, साधु और संन्यासीओ भी भवनाथ महादेव के दर्शन के लिए दुर–दुर से आते है। यह स्थल मुचकंद, भुतृहरी और गुरुदत्तजी गुफाये भी है। गुजरात सौराष्ट्र से लगभग तीन लाख जीतने लोग यहाँ आते है। आहिर और मेर जाति के लोग यह स्थल पर विशेष आस्था रखते है। मेले में चार दिन तक रात को लोकसंगीत –रास गरबा भजन–किर्तन के कार्यक्रम होते है।

मातेकठारी पूनमनो मेलो(आसो वद १५)

डाकोर वैष्णवो का बडा तीर्थ में से एक है। मथुरा मे जरासंघ के १८ बार हार होने के बाद काल्पवम मथुरा चला आया। यादवो का संहार को अटकाने के लिए दूर–देशी वापरी श्रीकृष्ण मथुरा का रणमेदान छोडकर गुजरात में द्वारका में आकार रहे। उन्होंने रण को छोडा इसलिए रणछोड से पहचाने गये । द्वाराका से रणछोडराय की मूर्ति भक्त बोडाणो डाकोर लाया तब से डाकोर में श्रीकृष्ण का स्वरुप रणछोडजी से पूजने लगे। शरदपुनम के दिन रणछोडराय को रेशमी वस्त्रो और किंमती अलंकारो से शणगारे जाते है। सवालाख रुपिया का मुंगट ईस दिन को खास रुप से पहनाते है।

शरदपूनम का यह मेला तीन दिन का होता है। इन दिनों में सो से ज्यादा दुकानो में खिलौना, तैयार कपडे, सस्ते आभूषणो, घरवपराश की चीज वस्तुओं का ज्यादा वेचाण होना है। आसपास के गाँवो से बडा लोक समुदाय इस मेले में आते है। वर्षाऋतु के अंत में योजाता यह मेले में किसान उत्साह से भाग लेते है। क्योंकि उस समय इनके थोडी फूरसद मीलती है। यह दिनो में हवामान भी खुशनुमा और उत्साह प्रेरक होता है, इसलिए मेले को मनाने के लिए यह आदर्श समय माना जाता है।

माधवराय का मेलाः–

पोरबंदर के पास माधवपुर गाँव में हर साल यह धुमधाम से मनाया जाता है। चैत्र सुदी नोम(९) से लगभग पांच दिन चलता यह लोकमेले में एक पुराने प्रसंग की भव्य रुप से मानते है। ऐसा माना जाता है कि श्री कृष्ण स्वयं रुकमणी की बिनती से उनका अपहरण करके यहाँ के मंदिर में उनसे शादि की थी। इस प्रसंग की याद में हर वर्ष यहाँ माधवराय का मेला मनाया जाता है। यह शादी के भाग के रुप में गणेश स्थापना, मंडप विधि, वरघोडी, स्वयंवर विधि आदि प्रसंगो यहाँ विधिवत पूरी धूम धाम से पाँच दिन तक मनाते है और रंगबेरंगी वस्त्रो पहनकर गुजरात भर के लोक समुदाय इस शादी को मनाने के लिए इस मेले मे आते है।

मेघराज की छडी का उत्सव मेला

भरुच का मेघमेला यह लोक मेला है और यह एक अनोखा ही उत्सव भी है। समग्र भारत में कहीं भी यह मेघराजा के आने के उत्सव की प्रणालिका नहि है। हर साल श्रावण वद नोम के दिन मेघराज के छडी को जूलाने का उत्सव मनाते है। यह उत्सव की मूल शरुआत करनेवाले यादव वंश की भाई नाम की पेटा ज्ञाति है। नदी के किनारे रहेती है और नाव में माल सामान की हेराफेरी का काम करती है यह प्रजा मेघराजा को बहुत ही महत्व देती है। यह मेले में आदि संप्रदाय के लोग भी आते है। ऐसा माना जातै है कि जब गुजरात में छप्पनिया यानी (छप्पन) पहेले एक बडा दुकाळ पडा उस समय रुठे हुए मेघराज को मनाने के लिए भाई ज्ञाति के लोगो ने अषाढी अमावस की रात मेघराजा की मिट्टी की प्रतिमा बनाई उनकी पूजा कि, फिर भी मेघराजा प्रसन्न न हुए इसलिए यह ज्ञाति के वृध्धोने प्रतिज्ञा ली की २४ घंटो में बारिश नहि हुई तो यह प्रतिमा को तलवार से खंडित कर देंगे। योगानुयोग उस रात बारीश हुई, उसी समय से हर साल श्रावण वद दशमी की संध्या को मेघराज की मूर्ति का विसर्जन का वरघोडा निकालते है। और यह मूर्ति को नर्मदा नदी में विसर्जन करते है। अगले दिन (श्रावण वद नोम) छडी का उत्सव मनाया जाता है। जीस में भरुच के भोईवाडा के मंदिर में घोघरवा मेघराजा की घोडे पे सवारी नीकालते है। चार दिन बडा मेला होता जिसमें आसपास के ग्राम्य प्रदेश के लोक समुदाय आते है।

रुपाल की पल्ली का मेलाः–

गुजरात के पाटनगर गांधीनगर से १५ कि.मी. के आगे रुपाल गाँव में हर साल नवरात्री के समय मेला लगता है। देवी वरदायिनी माता को आस्था भक्तो उस दिन माँ की पालखी उचक कर गांव में घुमते है। देवी को प्रसन्न करने उनको घी का प्रसाद अर्पित करते है। देवी की पल्ली–पालखी को ऊंचक कर चलता– लंबा वरघोडा यह मेले की विशिष्टता है। माताजी की पल्ली–को दर्शन करना और मेले में भाग लेने का रुपाल के आसपास गाँव के बडे प्रमाण में लोक समुदाय यहाँ आता है।

चित्र विचित्रेश्वर का मेलाः–

आदिवासी में अद्वितिय गीना जा सके ऐसा मेला होली के बाद चौदा दिन खेडब्रह्मा के पास गुंभवेरी गाँव में नदी के किनारे होता है। महाभारत का चित्रवीर्य और विचित्रविर्य की स्मृति में यह मेले का हर साल आयोजन होता है। श्रद्धालु आदिवासी स्त्री पुरुष यह मेल मे आते है कि उनके स्वजनो को रोग–दर्द से मुक्त करने की मानता रखते है। ऐसा माना जाता है कि चित्रवीर्य और विचित्रवीर्य दोनों प्राचीन काल में यह स्थल पे रुके थे और रोगमुक्त हुए थे।

गोळः–गधेडा का मेला

होली धूळेटी के तहेवार के बाद पंचमहाल के आदिवासी विस्तार में होता है। यह मेला एक बडे मैदान में होता है। इस मेले में बडे बांस के उपर एक मांचडो बनाया जाता है उनके उपर गुड की पोटली होती है। यहाँ पर आदिवासी स्त्रियाँ लकडी लेके खडी होती है। एक युवान के उपर चढकर गुड की पोटली को लाना होता है। उनके लिए युवान को स्त्रियाँ का मार भी खाना पडता है। जब वह पोटली नीचे लेके आता है तब गुड के टुकडे सभी खाते है। कभी–कभी युवान की मनपसंद लडकी से उनकी शादी करवा देते है। इसलिए यह मेला को गुड गधे का भी मेला कहा जाता है।

चूल मेला

यह आदिवासी होली के दुसरे दिन आयोजन करते है। यह मेले में स्त्री पुरुष होली की अग्नि पर चलते है पर उनको गरम नहि लगता है। इसलिए यह आदिवासी अग्नि पूजा का प्रण लेते है। उनका मानना हैं कि अग्नि देव सबकी रक्षा करते है।

शाहआलम और सरखेज का मेलाः–

गुजरात भर में १७५ जीतने मुस्लिम मेले में सबसे ज्यादा मेला अमदावाद भरुच और सुरत में होते है। इनमे से दो प्रसिध्ध मेले का अति महत्व है और दोनो अहमदावाद में होते है। पहेला मेला अहमदाबाद के दक्षिण में सरखेज और दुसरा शहेर में शाहआलम विस्तार में है। सरखेज का मेला संत शाह अहमद खट्टु गजबक्ष साहेब की कबर के पास तालाब के

किनारे होता है। दुसरा सुप्रसिद्ध संत शाह आलम की याद में होता है। यह दोनो मेलो में मुस्लिम के अलावा अन्य लोकसमुदाय भी आता है।

गुजरात के उत्सव

मानवी स्वभावगत उत्सव प्रिय है। महाकवि कालिदास शब्दो में बताया है कि 'उत्सव प्रियः खलु जना'

भारतीय संस्कृति अति प्राचीन है उतनी ही भातीगळ भी है। यहाँ अनेक धर्म है, अनेक जातियाँ है और उनके विशिष्ट उत्सव भी है। भारतभर में धर्म प्रदेश के जाति–ज्ञाति के भेदभाव के बिना समान रुप से मनाते है। मकरसंक्राति, वसंतपंचमी, होली, दिवाली जैसे ऋतु परिवर्तन के साथ उत्सव सार्वजनिक हो जाते है। रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्री, नवरात्री जैसे धार्मिक उत्सवोंमे पूजा, व्रत, उपवास करने में भी नगरजन के गाँव के लोक समुदाय एक जैसे होते है। दिपावली, नया साल, पर्व दिनो में घरके आंगन में रंगोली तथा साथया करके, दिया जलाके, आतीशबाजी करके, नयें कपडे पहन के, मिठाई खाके परस्पर शुभेच्छायें दे के उत्सव का आनंद मानते है। आम ऐसा कितने उत्सव है, जो गुजरात की समग्र प्रजा सभी समान रुप से मनाती है।

विशिष्ट उत्सवो

अनेक उत्सवो ऐसा भी है जो गुजरात के लोक समुदाय खास विशेष रुप से मनाते है।

होली का त्यौहार समग्र गुजरात मनाती है फिर भी कुछ प्रजा के लिए उनका एक अलग ही महत्व है। सौराष्ट्र की मेर प्रजा होली का तहेवार अलग रुप से मनाती है। इसमें लकडी से लडाई करते है फिर गाँव का मुखी ऊंची बेडी पर जाके उसे बंध करने की हाकल करते है। युवानो अंत में एक–दुसरे को गले लगाकर खुशी मनाते है।

कितने गाँव में होली के दिन खास प्रसाद गाँव के चौरा (मध्यस्थ जगह) पर घडा (मट्टि का बर्तन) उनके अंदर रखी जाती है। एक जुथ उनकी रक्षा करता है दुसरा उनसे लूट करके जाते है। दो जुथ के बीच लडाई होती है और गाँव का मुखियां उसे बंध करवाता है। अंत में प्रसाद ले के खुशी मनाते है।

सौराष्ट्र के कारडिया राजपुत होलीके दिन। आंबली काढवी की रमत खेलते है।

शांति दोडः–

बैशाख शुद तीज यानी अखात्रीज का यह त्यौहार सामान्य होकर भी किसान वर्ग का विशेष महत्व का है। नये पाक के लिए किसान खेत को खेडना का शुभ माना जाता है। गाँव के पादर (मध्स्थ जगह पे शांति दौड का आयोजन होता है। किसान अपने बैल को शणगार के यह शांति दौड में जुडते है। जो किसान प्रथम आता है उनको पाघडी पहेनाकर गाँव के लोग उनका सन्मान करते है।

डांग, पंचमहाल आदिवासी अखात्रीज के दिन वसंतोत्सव का समापन करते है।

वटसावित्री और गौरीव्रत

जेठ मास दो व्रतोत्सव, निर्जला एकादशी और वटसावित्री पूर्णिमा गुजरात का लोकसमुदाय श्रध्धा से मनाते है। गुजरात में भीम एकादशी के नाम से जानी जाती है। उस दिन खाना – पानी भी नहि पी सकते है।

जेठ मास की पूर्णिमा का वटसावित्री का व्रत स्त्रीयों का पवित्र उत्सव है। पुराण कथित महा सती सावित्री के चरित्र को याद करके स्त्रीयों वट वृक्ष–वडला का पूजा करते है।

वर्षाऋतु की शुरुआत में गाँव का वातावरण पुरा बदल जाता है। वर्षा का आगमन एक बडा उत्सव माना जाता है। अषाढी महा एकादशी से व्रतो की शुरुआत होती है। अषाढ में ही गुरुपूर्णिमा भी आती है ओर गुरु प्रत्ये का आदर भाव और मान सहित का उत्सव मनाया जाता है।

यही महिने में कन्याओ का गौरीव्रत आता है। छोटी–छोटी लडकियाँ पार्वती की निष्ठा से पाँच दिन नमक नही खाती है। छोटी छोटी टोकरी में जवारा उगाकर प्रकृति की पूजा करते है। शिव पार्वती का भी पूजन करते है। यह दिनों में छोटी बाला महेंदी लगाती है, अच्छे कपडे पहन के गरबा गाती है, खेल खेलते है, गीत गाती है, जागरण करती है, बडी स्त्रीयाँ शंकर पार्वती का व्रत करती है जो अलूणा करती है। गुजरात में गोर मां का व्रत बहुत उत्साह से मनाते है।

दिवासा नो ढींगलो

हमारे यहाँ पूर्णिमा के साथ अमावस्य का भी उत्सव होता है जो बहुत ही नोंधपात्र है। दिवासो (अषाढ वद अमास) होली की तरह सर्वभाग्य, लोकभाग्य त्यौहार है। दक्षिण गुजरात में दुबला जाति के लोग उन्हे विशिष्ट रुप से मनाते है।

दुबला जाति के लाग दिवासो दिन कपडे के चींथरे (टुकडे) में से जिंदा माणस के कद का ढींगला बनाते है। उनका देखाव क्रिया सूचक में होता है। ढींगलो साहबशाही होता है। टोपो, कोट, पातलून, टाई पहेना होता है। मुंह में चिरुट या सीगारेट होती है। उनका सरघस नीकालते है सभी नाचगान के साथ उन्हे नदी के तट पे ले जाते थे। वहां पर वह मेले में बदल जाता है। उसके बाद ढींगला का विसर्जन होता है। भरुच में भी यह ढींगला का माहत्मय देखने को मीलता है।

वर्षना उत्सवो

वर्षाऋतु के चार महिने में लोक समुदाय महत्व का होता है। अषाढी बीज के दर्शन कर के लोग आकाश के सामने वर्षा के आगमन के प्रतिक्षा करते हे। वर्षा समयसर आता है तो लोकसमुदाय आनंद विभोर हो जाती है। मेघराजा को बुलाने के लिए यज्ञ, व्रत, उपवास, भजन, आराधना वगेरे का आयोजन होता है।

मेघराजा की छडी

पहेला उत्सव मेघराजा की छडी है। भरुच जिले की भाई प्रजा के लोग अषाढ सुद दशम के दिन मनाया जाता है। मेघराजा के प्रतिमा बनाने के दस दिन पूजा करते है। नदी में प्रतिमा का विसर्जन करते है।

जलझीलीणी

मेघराजा के आगमन का स्वागत के लिए और खास त्योहार में भादरवा सुद एकादशी व भाल प्रदेश में मनाया जाता है। जलझीलीणी एकादशी उत्सव भी बडा होता है। साल के नये जल का स्वागत के लिए मनाया जाता है। यह उत्सव ठाकोरजी को पालखी में बिठाकर गाँव के अंदर – गाँव के बाहर तालाब में ले जाते है। वहाँ ठाकोरजी की मूर्ति को नये जल से स्नान करवाते है। पूजारी चीभडा और नारियेल का प्रसाद बनाते है फिर तालाब में अर्पण करते है और प्रसाद को लूटने के लिए सभी तालाब के पानी में झंपलाते है। बाद में प्रसाद लेके सब गाँव में मंदिर जाते है।

नाग पांचम और शीतळा सातम

श्रावण सुद पाँचम नागपंचमी का त्यौहार गुजरात के किसान और मालधारी प्रजा स्त्रीयों के लिए विशेष महत्व का होता है। पूरी साल खेत में वन में काम करती यह प्रजा नाग दंश से बचने के लिए श्रध्धा पूर्वक पूजा करते है। स्त्रीयाँ पनिहारी पे नाग–नागणी का आलेखन करके दिया जला के कुलेर का प्रसाद बांटते है।

शीतला सातम के दिन गाँव की स्त्रीयाँ अगले दिन यानी छठ (रांधण छठ) के दिन– घर की महिलाए खाना बनाती है। घर में मिठाई नमकिन प्रकार के खाने बनते है, दुसरे दिन

यानी शितला सातम के सुबह उठकर शीतला माँ कि पूजा करते है। पूजा में नारियेल, गीलोडी के पत्ते, फूल, आदि ले जाते है, उस दिन चूला नहि जलता है। पुरा दिन ठंडा खाना होता है। यह व्रत माँ अपने बच्चे के लिए शीतला के कोप से बचने के लिए करती है।

जन्माष्टमी के तहेवार लोकसमुदाय गोकुळ आठम से मनाया जाता है। रबारी और भरवाड प्रजा के लिए सर्वश्रेष्ठ तहेवार मनाया जाता है। मध्यरात्रि को पंजरी का प्रसाद होता है। दुसरे दिन दुधपाक का खाना घर घर में होता है।

दरिया देवी पूजा

नारियेली पूर्णिमा का त्यौहार गुजरात के कांठा विभाग के खारवाओं की अनोखी श्रध्धा से मनाते है। सहपरिवार दरिया किनारे वह दरिया देव का और नाव का पूजा करके नाव के आगे नारीयेल फोड के समद्र में फेंकते है। फिर नृत्य भजन किर्तन होते है।

समापांचमः–

भादरवा मास की ऋषि पंचमी अथवा समापांचम का त्यौहार लोक समुदाय खास तरीके से मनाते है। उस दिन बिना खेड वाला अनाज खाने का महिमा है और यह समुदाय श्रध्धापूर्वक मनाते है। असंख्य गाँव में पांचम का मेला लगता है और यह उत्सव होता है।

नवरात्री और दशहरा

नवरात्री से नवदुर्गा की पूजा होती है। गाँव में पुरुष हर रोज तलवार बाजी खेलते है। रात में माताजी के गरबा रास का आयोजन होता है। भवाई वेश भी होते है। जीस में राम रावण, हनुमानजी का गदायुध्ध आदि खेल का समावेश होता है।

बिजयादशमी अथवा दशहरा का उत्सव ग्रामीण प्रजा में रसपूर्वक मनाते है। पहले रजवाडाओ यह दिन गाँव में विजय सवारी का आयोजन करते, आज भी कुछ गाँव में होता

है। क्षत्रियो उस दिन खीजडा (शमी) वृक्ष को शणगार के उनके पानी की आप–ले करते है और अपने ओजारो की पूजा करते है।

वाघबारस का 'बोलावो'

दिपावली खूब प्रचलित त्यौहार है। आदिवासी यह उत्सव वाघबारस से मनाते है। डांग विस्तार में गाँव का मुखियां उपवास करके सामूहिक उत्सव का प्रारंभ करता है। बोलावो की विधि में बांस भरी आस पास के गांव का संदेशा भेजना होता है, संदेशे में लिखा होता है "अडधो जाय बध्धोजाय, जाती जाय, जापरे गांगली गोयणने घेर" बांस की यह भारी एक गाँव से दुसरे गाँव पहुचाती है। अंत में देवी– माता की देरी में उनका समापन होता है।

धनतेरस

धनतेरस के दिन संध्या के समय गाँव में गाय के टोली को एकठा कीया जाता है उसके बाद दौडाया जाता है। सौराष्ट्र में कितने हिस्सों में यह देखने को मीलता है। गाँव के लोग इसलिए धणतेरस कहते है।

पंचमहाल के आदिवासीयो दिवाली में खखोहलो करते है। तूटे हुए कोडिये में गाँव के युवान अग्नि जलाते हुए उसमें नमक और मिर्च डालकर जो धुंआ होता है वह पूरे घर और खेत में फेलाते है। उसके बाद वापस गाँव आकर अग्नि को बुजा देते है। एसा करने से घर और खेत सुरक्षित रहते है ऐसी उनकी मान्यता है।

तुलसी विवाह

देव दिवाली के प्रसिध्द पर्व को 'तुलसी विवाह' गुजरातभर में मनाया जाता है। सौराष्ट्र में खास करके भाल नळकांठा का ग्राम्यविस्तार में विशेष होता है। कार्तिक सुद एकादशी का यह उत्सव श्रीकृष्ण और तुलसी का लग्नोत्सव परंपरा पूर्वक मनाते है। श्रीकृष्ण की मूर्ति को पालखी में रखकर पुरे गाँव में घुमाते है, उसके बाद गाँव के लोग नई शेरडी का

प्रसाद सब से पहले पालखी में रखते है। यह प्रसाद बाद में गाँव के लोग खाते है। रात को रास गरबा भजन किर्तन होते है।

अन्य विशिष्ट उत्सवो

गुजरात के लोकसमुदाय में विशिष्ट उत्सवो में सुरत और भरुच जिल्ले खारवा लोग में घोघाराय की छडी सौराष्ट्र के महुवा के पास कतपर गाँव में कोळी समाज से मनाता दरियापीर का उत्सव, सौराष्ट्र के रबारी कुलदेवी ममाई माताजी का पूजा उत्सव, उत्तर गुजरात के पाटीदारों द्वारा मनाया जाता 'हलोतरा' का उत्सव मनाया जाता है।

लोकव्रत

गुजरात में व्रत के दो प्रकार है.

(१) शास्त्रीय पौराणिक (२) कुमारिका व्रत अथवा वस्त–वस्तला। दुसरे प्रकार के व्रत में अच्छे पति को पाने के लिए या पति और बच्चों की रक्षा करने के लिए उनके साथ अनेक देवी देवताओ में भी अनेक दंत कथा मीलती है। कुछ व्रत बहुत ही प्रचलित है जैसे की–मावडीनुं व्रत, गोरमानुं व्रत, धानके–घानकीनुं व्रत, सूरज–पांदडु, श्रावणिया सोमवार, तुलसीव्रत, पोषी पुनम, मोणाका, एवरत जीवरत, पुरोषोत्तम मासनुं व्रत, घरो आठमनुं व्रत आदि समावेश होते है। पहले व्रत में शास्त्र के पुराण कथित होता है और यह व्रत पुरोहितो या कर्मकांडि ब्राह्मणो द्वारा होता धार्मिक नियमानुसार होता है।

गुजरात में लोकडायरो

गुजरात में प्रचलित लोक डायरो वह भी एक लोकसाहित्य में आता है। लोकडायरा आज के समय में बहुत ही प्रचलित हो रहे है। लोकडायरो में जो लोकगीत के कवि होते है वह एक बात को लेके या एक प्रसंग को लेके उससे हमें दोहा, गीत आदि में समझाते है। लोकडोयरो का आयोजन रात के समय में ही करते है। गाँव के पूरे लोग आते है। उसमें जो लोकडायरो करने वाले लोक कलाकार आते है वह लोग उपस्थित लोगो को खुश करने के

लिए शायरी, दोहा, सोरढा आदि का गान करते है। शोर्य की कथा कहते है। सामाजिक जो प्रश्न होते है उनकी चर्चा भी करते है। उनका अंदाज जो होता है वह सभी को आकर्षित करते है। उनकीवाणी से प्रसन्न होके डायरा में उपस्थित लोग पैसा भी देते है। लोक कवि पुरी रात डायरा को चलाते है। डायरा में सामाजिक के साथ धार्मिक भगवान सबंधीत भी बात होती है। इसी तरह गुजरात में लोकडायरो आज सौराष्ट्र, जुनागढ, उत्तर गुजरात में देखने को मिलते है।

गुजरात में इसी तरह लोकसंस्कृति की अलग–अलग झांखी हमें मीलती है।

एक राज्य होकर भी प्रदेशो के साथ सबकी रहन–सहन का, सामाजिक, धार्मिकता का अलग अलग रुप देखने को मीलता है। इसी तरह गुजरात लोकसाहित्य बहुत प्रमाण में मीलता है। हमारे आस–पास में भी कही कही पर हमें वह देखने को मील जाता है।

निष्कष

अध्याय दो म गुजरात के लोक साहित्य के विकास का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात को लोक वाता, लोक कथा, लोक गाथ, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक आख्यायन , लोक सुभाषितों का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात के लोग पहेले से ही धामिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हवा है। लोक गीत म लोक को भावना के साथ साथ अपने मन को प्रफुल्लित कराते लोक गीत के साथ-साथ लोक कथा जो रसात्मक रूप से उपदेश देती सामाजिक कथाओं का वणन किया है। लोक नाट्य भवाई मुख्य नाट्य के साथ गौण नाट्य का उद्भव और समाज से उनका जुड़ाव का सामाजिक काय का विस्तार से

परिचय दिया है। लोक आख्यायन जिसम पौराणिक कथा से आज को समस्याओं का वणन किया है। लोक शुभाषितो को गुजराती म कहावत के नाम से जाने जाते है। यहा पर हर एक बात पे कहावत मिल जाती है। उनका उपदेश छोटी बात म मिल जाता है।

संदभ

1. लोक विज्ञान, डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 1.
2. लोक विज्ञान, डॉ. हसु याज्ञिक, पृ. 34
3. गुजराती लोक साहित्य विमश, बलवंत जानी पृ. 36
4. गुजराती लोक साहित्य विमश, बलवंत जानी पृ. 36
5. गुजराती लोक साहित्य विमश, बलवंत जानी पृ. 37
6. गुजराती लोक साहित्य विमश, बलवंत जानी पृ. 37
7. लोक साहित्य विमश, जयमल्ल परमार, पृ. 33

8. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 29

9. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 29

10. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 29

11. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 38

12. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 43

13. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 45

14. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 45

15. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 33

16. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 66

17. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 71

18. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 74

19. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 94

20. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 90

21. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 96

22. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 98

23. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ.111

24. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 129

25. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 134

26. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 137

27. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 156

28. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 160

29. गुजराती लोक साहित्य, लोक गीत पृ. 147

30. लोक साहित्य, सं. प्रभा शंकर तैरैया, नरोत्तम पालण, पृ. 61

31. गुजराती साहित्य का इतिहास, जयंत कृष्ण, हरी कृष्ण दवे , पृ. 26

32. गुजराती साहित्य नो इतिहास, झवेरचंद मेघाणी, ग्रंथ-4, पृ.528

33. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 4

34. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 42

35. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 77

36. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 120

37. गुजराती लोक साहित्य भाषा, मणको, पृ. 296

38. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 4

39. लोक गुजरी अंक 11, पृ. 46

40.जोटरा ढोलिया: कारायल, पृ. 33

41. जोटरा ढोलिया: कारायल, पृ. 21

42. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 138

43. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 140

44. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 141

45. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 151

46. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 153

47. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 155

48. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 157

49. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 158

50. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 162

51. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 166

52. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 168

53. लोक गीत: तत्व अने तंत्र, पृ. 169

54. दस डांगी लोक कथा, डॉ. प्रभु चौधरी, पृ. 53

55. लोक वाता स्वरूप विमश, डॉ. प्रांजलिक पटेल, पाश्र्व प्रकाशन, प्र. □.2009 □.299

56.□□□ □□□□त□ □□□□□□□ □□प्र□□□, □□□□□ज्ञे□, □□□□ प्र□□□□, □□□□□□□□, □.29

57. □□□ □□□□ स्□रू□ □□□□, □□. प्र□□□□□ □□□□, □□श्□ प्र□□□□, प्र. □.2009 □.30

58. □□□, □.30

59. □□□, □.30

60. □□□, □.31

61. □□□, □.31

62. □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□, □□□ □ल□□ □□□□□□, पार्श्व प्रकाशन, प्र. □. 1990 □.317

63. □□□□त□ □□□□, □□□□ल□ □□□□□, प्र. स□□□, प्र. □. 1990 □.52

64.□□□ □□□□त□ □□□-2, □□□ □□□□□□□□□□, □□□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□ प्र□□□□, □.□52

65. □□□ □□□□ □□□□त□ □□□-2, □□. □ल□□ □□□□, □□ . □□□□□□□ □□□□□□□, □.33

66. लोक वाता साहित्य भाग-2, डॉ वल्लभ जानी, डॉ [illegible] [illegible], पृ 3

67. the science of folklore, A.H kroppe Re. 65, पृ 9

68. The Study of American Folklore, J.H. Brunvand, [illegible]79

69. व्रज साहित्य का अध्ययन, [illegible] [illegible], आग्रा .938, पृ 3

70. ऐजन पृ .61

71. गुजराती लोक कथासं [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], पृ 4

72. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-2, डॉ वल्लभ जानी, डॉ [illegible] [illegible], पृ 5

73. लोक वाता स्वरूप विमश, डॉ प्र[illegible] [illegible], पाश्र्व प्रकाशन, प्र. सं 009

74. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], डॉ [illegible], संशोधनग्रंथ, [illegible] [illegible], सौ ा. पृ 4

75. गुजराती कहावत संह तथा ाचीन दोहाओ , साखीओ , प्र. मूल चंद आशाराम शाह, द्वि. 2000 पृ .

76. गुजराती कहावत संग्रह तथा प्राचीन दोहाओ, साखीओ , प्र. मूल चंद आशाराम शाह, द्वि. 2000 पृ .0

77. गुजराती कहावत संग्रह तथा प्राचीन दोहाओ, साखीओ, प्र. मूल चंद आशाराम शाह , द्वि. 2000 पृ .0